

ASHA ARCHIVES

पुस्तकालय

1497

ASHA ARCHIVES

नमः॥ ॐ वृक्षाय नमः॥
ॐ वृक्षाय नमः॥ ॐ वृक्षाय
नमः॥ ॐ हानिश्च नाय
मः॥ ॐ वा हवनमः॥ ॐ व
नवनमः॥ ॐ जन्मने नमः
॥ नवग्रह वलियार्त्तः॥ ह
र स र स्वाहा॥ क मयार्त्त
॥ मंगी ॥ ॐ मयार्त्तः॥ क म
व श्रु पूजा॥ ॐ स्वाहा
न श्रु दीयार्त्तः॥ ॐ गुरु स
हा॥ दक्षाय नमः॥ नमः
ॐ वनि वा भसमर्त्तः॥ क
सा पातर्त्तः॥ जाया स्वा
दवपनि ॐ न्द्रादि न
मर्त्तः॥ ॥ वहिष्ठा वा
द स मर्त्तः॥ द व स न्द्रास
स स्वाका दव॥
धाय गान्धर्व क्रम नमः
का विय धर्म्तः॥ धव २

नच नाद्रु नि वियमात्तः॥
॥ पूर्यार्त्तः॥ नाद्रु नि वियम
त्तः॥ ॥ ॐ क्रौं क्रौं क्रौं श्रीं हि
स्वा स्व कन्द मल्लो न वाय
स्वाहा॥ धाम २॥ ॥
पूर्यार्त्तः॥ घनाद्रु नि पू
र्यार्त्तः॥ ठाकि प्रादा वना
सनाद्रु न वहा वक्रा क रु
म रुकी रुज रुज रुज समा कर्त्त
त्य व कर्त्त वा ला कर्त्त वा
माश माया म रु वि प रुत्त रु
क लि र्त्त मूर्त्त व वि र्त्त नि का
जार्त्त नो मि म रु का म जननी
स रु श्र हा सार वि॥ नृ मि
ह वि पू र्त्त स म रु सा मु स्वा
हा॥ ॥ न नादा म वा ग्रु
दि॥ ॐ नृ म्हाय रुट्॥ वि सा
ध॥ नृ ध पा ग्रुत्त र व न हाय
॥ नृ मि स पा न॥ नृ म्हाय रु

त ध्वज ३॥ य नन स्वस्ति कथा
 य ॥ हाम पात्र सुविदि नय
 क ॥ ऊऊ मानन ॥ या सवन
 ॥ ह्य या सवन यक ॥ ऊ व न्न
 क न तिल स्रु न ॥ मधू दधि
 ॥ द्र ग्व न्न रि ॥ मि सि न वे ला
 रु ल ॥ जा नि व ॥ न के ॥ सि मि
 धि ॥ २ ॥ नू द वा न ॥ हाम स
 ॥ न क्का ॥ चाल ॥ सि नू लि का
 प ल ॥ का ट ॥ ऊ प मा ला न
 य ॥ ध न न या व ॥ ऊऊ मान
 स्य ल व द्वा य क ॥
 गृ य जी वि धा ऊ प नू ॥ ३ ॥
 ख उं (न न संपू ज् ॥ न्ना वा
 ह ना दि धे नू मू द्रा द र्श य न
 ॥ ऊऊ मान न ला दा न न धि
 य क ॥ वा क्क ॥ ॥ न मा मि
 पा व का द वं प वि ग्रं स र्व क र्म
 स्र वि ष्ठ न न म हा न ऊ ऊ

वानां रु व दाय क ॥ स र्व क
 मा नि सा व र्त्तं न्ना र्थ रू ऊ न
 का व क ॥ न्न मि या दि स ना थ
 य जे ला र्त्तं द द या ल क ॥ स
 पू र्ण रू नि र्वा नि य रू क
 म्म स दा नि वा न्ना वा आ य न
 नू र्त्त व न म रू ष्ठ नि दा य
 क ॥ द धि हामा स ना पू रि
 ॥ की व हाम न ष्ठ नि क ॥ र्व
 मा स नू र्त्तं रु ला स र्व वा
 धि वि ना स न ॥ ना ऊ ऊ आ
 ति से हामा दा यू व दि य न
 रु न ॥ क रू र्त्त सदा हामा
 नि यू के रु रू से पि य ॥ न
 क्को ना स य ति वा धि व न्द्र प
 ना स का मि क ॥ ख दि व न्न
 र्थ ला रा य ह्या मार्ग व रू प
 य क ॥ स मि स म य न पा पः

सोऽस्य मधुन मन्त्रलिङ्गं
सुनरुवल्कामेन्द्रोन्नायवि
वर्द्धनं॥ कृणुद्वीविनं जीव
वटन्नाय कामनाथकं॥ न्ना
युश्रीयं वकल्यादीं पूजयेत्
धनानिव॥ रुवगागु वृषसा
दन सर्वकार्जुं सिद्धिमा॥
नमस्कात्रयाया॥ नृगुलि॥
खातिनं कृत्वा २४ नृद्वान
पागा २॥ सिलिपि पू २॥ थ
न नयावदु वा पात्रसमर्प
यामि॥ ॥ न्नावाय विदि
पात्रलवङ्गाय॥ वाक्छादन
मिनावर्द्धं सुकल्यन्दे वा
छादन वासे वो स्युं उर्यं म
हं संप्रदद॥ ॥ नृगिन्त्र
र्द्धं सुकल्य॥ ॥ नना न्ना
तिमात्रं॥ विष्णु २॥ पंवा
॥ नवरुहे॥ कृया॥ वट्टक॥

गला॥ यागिनी॥ वडुवदि
यानं न्नाद्रुतिवियमन्त्र॥
क्रौं वक्रास्वाहा॥ ॐ क्रौं
र्णक वाय स्वाहा॥ ॐ क्रौं वि
षुव स्वाहा॥ ॐ क्रौं नृनना
य स्वाहा॥ वक्रा॥ वक्रा
स्वाहा॥ पनितयाता॥ विष्
व स्वाहा॥ ॐ न्नादिया न वि
सहय॥ ॥ रुडकादिया
न विस्सहय॥ १०॥ ॥ व
क्रान्यादिया न विस्सहय
॥ ६॥ ॥ नृगिनाक्षादि
यानं विस्सहय॥ ६॥ पञ्च
वलि यानं विस्सहय॥ ॥
१ॐ क्रौं क्रौं क्रौं श्रीस्वकुन्दम
हा रुववाय स्वाहा॥ १०६
॥ ॥ वलंगनदलचुलल
कायावविदिनयावत्वा
वविया॥ सिलाकपालपाव

विय ॥ ॥ कलेठायानेना
रुनिविस्तरुय ॥ रुय वद्रक
गदयागिनी ॥ पश्चिमान
यानेना रुनिविस्तरुय ॥ ॥
॥ उं न्नादि ल्याय स्वाहा ॥ उं सा
माय स्वाहा ॥ उं न्नागमाय स्वा
हा ॥ उं बुधाय स्वाहा ॥ उं व
रुस्येनय स्वाहा ॥ उं शुक्राय
स्वाहा ॥ उं गनिध्वनाय स्वा
हा ॥ उं न्नाद्वय स्वाहा ॥ उं क
नवे स्वाहा ॥ उं कन्मने स्वाहा
॥ नवग्रहा ॥ ॥ गमगम
स ॥ कृष्णपूजा ॥ गद ॥ थ
उलि ॥ वलि ॥ हूं हूं स्वाहा
॥ उं हूं संपूर्णकलशाय स्वा
हा ॥ १०८ ॥ शुद्धगम ॥ शु
द्धगम ॥ रुटिकमदिमयंप
लवेंकृपयूकं वासंतीर्थ
पयूकं सकलमलिनिधि

पश्चिमानेना ॥ रुद्रका
रुप्रसं संपूर्णमलिगदीसकल
सुविने सर्वसावं नान्दवीना
मिरुकाठिवसकलमूर्वी
कृष्णमूर्तिनमाभुन ॥ १०९ ॥
निष्ठाव नदारु वनु ॥ ॥ नि
कलशमद्रुनि ॥ ॥ ननासं
का रुनिवियमन्तु ॥ उं क्रौः
क्रौं क्रौं स्वच्छन्दमहादेववा
य स्वाहा ॥ सितिथिपू १०८
॥ कार्यधन ॥ पूजावा ॥
॥ न्नादिसाकणवाग्रहयू
गसकलादावदि समस्त
नस्मन्नुय हृषू न कृत्तुहिम
न रुसदादवदवीप्रसन्ना
॥ नानाविधापठनममः
द्रुपिनपदामन्तु मूडाविला
पः ॥ यन्तु सर्वकर्मार्थपरुवउ
रुवना ऊरुसंपूर्णभव ॥ ॥

सन्ना॥ ॥ॐ क्रौं नै वा वाही
स्वाहा॥ श्राय॥ उरुहर्ष किं
छुरुदगाधिक छुद्रकानि
धा नाति धानक धि नान न
का टव क्रा॥ मी नास का सब
वया कत वा बृह स्फा वा नाः
दि श्री महि मग्न न गतानम
मी॥ ॥ॐ क्रौं पें न्द्रायनी
स्वाहा॥ श्राय॥ वरुह सजी
व हन लम नू व व ह नि न
जात्य व ग ग ग प वि ठारु
माना वि वा व ना स न स्ति ना
ध्रुव व क ह स्फा ले न्दी न मा
मि सूत्र कि न्न व द व व न्द्रा॥
॥ॐ क्रौं यें वामु भय
स्वाहा॥ न्द्रा कृति॥ श्राय॥
प्रेत स्ति ना स न क क न हा व
मा ला ख द्वा कृ डि डि म ध
वानु क पा ल मा ला डं शु
क ना ल व द ना ज ग द व ध

जि वा मू लिका ठा व द नो मि
स दा य स न्न॥ ॥ॐ क्रौं
गं म हा ल श्री स्वाहा॥ न्द्रा कृ
ति॥ श्राय॥ सो न्द्रा सा व न
वि ना क म ला य ता हि पी न
सु ना ल सित हा व व सि ठा
रु माना॥ ख द्वा लि ष्ट व व व
दा रु य पा नि वृ पा ल श्री न
मा मि म ह नी म ह नी य मूर्ति
॥ॐ क्रौं जं जा ग्नि स्वाः
स्वाहा॥ गि व पि॥ श्राय॥ सि
द्व न पूं क स द ष्म न स वा
न न या त क्ता म ना व न छु
हि न न मू ल मा ला का था
ध ना रु व यू ना वि ष वि न्द्र
ह स्फा त स्मे न मा मु ठा त नै
कू ल या ग मा ना॥ मूल
द वी ष्ठ थ व र म न्न न॥ १०८
॥ श्राय॥ जें अ हं काल कूट
क्रौं स्वाहा॥ १०८॥ ला जा

प्रतिष्ठा ॥ पञ्चरस उकादा
य ॥ वृषि पूजा ॥ पठुत प्य
न ॥ हि रुय पञ्चरस माया
न ॥ धन दवात्रे न विविध
॥ ॥ गिरहा मरुत सा
निखूति दूगु ॥ वसु मगस्य
न नागसं गिरहा कदका
व था लरुस रुस्य काय ॥
ऊव खव मदा वकं एन पा
ला हा न न पा न म ॥ सां वाः
ऊव स ॥ सखा खव स ॥ रु
चने दथु स ॥ इ (मन न य ॥
॥ ॥ कुरु सुनिर्गता ॥
गिर मांस सस ॥ मनु ॥ उं
कं ॥ न म्माय रुद्र ॥ नृय पा
प्रसं ख न हाय ॥ गंग मरुत
न वा ले ॥ ला स ॥ वा स न वा
ले ॥ विव कं न रुले दि धन
वा स ल न वा ले ॥ ॥ सिन
स क्का य ल प ॥ वत सिधन

ऊऊमका ॥ पंचरस पान ॥
मूपस ॥ दक्षि नय ॥ त्रु व न
न म ॥ झाडं पा न न खा ल स
पूय क ॥ झाडं स्नान द्वाय मा
ल ॥ धन सिन द्वाय लय ॥ ॥
धून दा व पूऊ न या य ॥ सि
ल स ॥ षडं गाल पूजा ॥ नृ
दा क (धनू मूजा ॥ ॥ क
उ या ऊ व ला स ॥ पञ्चरस मा
पूजा या य ॥ मनु ॥ पूर्व स ॥
मो म म ल धा ना या पा द्का
॥ वृ ॥ वं धू ख व न स ॥ ॥
॥ ॥ द क्रि ल य थ दि ॥
॥ मो ॥ न क धा ना या पा द्
वृ ॥ का ॥ य धि म न थ द्
इ ॥ ॥ वृ ॥ को न धा ना
या पा द्का ॥ ॥ उ ल न य
थ ना सा का ॥ ॥ य ॥ ग
ध द क धा द क धा वृ ॥ ना
या पा द्का ॥ म धा य थ

॥ वनामं धनपूय ॥ ॥
 मां वीनप्रादीधनायां
 पादकां ॥ ॥ धना
 का ॥ (ग) उचनं सिधन
 इमका ॥ खाननका
 यपावनय ॥ पंचधना
 ज्ञाय ॥ ॥ धाय ॥ मम
 नंप्राप्ति धनायां विद्यीन
 सरुत्प्रदं ॥ नका धना
 ज्ञायायां व्याधिना सरुत्
 प्रदं ॥ कीनयधिमधना
 यां ज्ञायुवदिरुत्प्रद ॥
 उरुनसूगन्धधनायात्
 श्रीवदिरुत्प्रदं ॥ मधु
 वीनप्रादीधनायां मधुस
 र्पिसधनकं ॥ पंचधना
 प्रसिद्धानि इह कर्मानि
 सिद्धानि ॥ ॥ मां सादुनि
 यानं लाकादयक ॥ १०८

॥सुलामूलदयकं॥वासु
नक्षत्रय॥ ॥शीलजप
तपमनु॥नृधायवक्रव
तिथी३॥रुकातसकाला
॥मथययाशुला३॥य
यामूलमनुनधाय२०॥
स्वच्छन्दमूलमनुन॥धाय
२०॥नृधायमनुनधायः
२०॥शिवरुमरुतसाध
॥॥॥शिवरुमरुत
सा॥॥शिवमसपूजा॥
॥रुदयादिषष्ठं॥गन॥॥
॥रुपतपमनुनवात्मान॥
धाय०॥नृवाहनादि॥ध
नृमूडा॥रुयमानकापय
कं॥वा॥सु॥सु॥सु॥नृ
यानि॥रुगस्यपिसि॥रु
॥॥पिकातमासम॥रु॥
रु॥रु॥नृ॥नृ॥सि॥रु॥

मासहामिनकोडाथद
धिसंयुतं॥ अवकीनान
हामिनशालिनशुलव
लिन। पीयमठ४ गिरा
दवद्वचुन्दधानरूपध
क॥ च्छागमांसकलंघे
पीनूनअवपानून॥ कीना
रुवरुवशानिदधियुधि
प्रजायन॥ ॥ त्रावायेद
किं॥ ऊजमाननत्रावा
यलवज्ञाय॥ वाक्॥ त्रा
वायोयमूरुह्याचुगसि
वमांसपापउपदाहया
मि॥ ॥ अवलाहानऊव
७ अवलासदय॥ खवला
हाथखव७ खवलासदय
॥ स्याखवसदय॥ स्ववा
जवसदय॥ निवहामया
य॥ मनु॥ नु॥ म॥ म॥

सदय॥ प्रागमूलमनुन
दय॥ सिवहामरुलसाम
नु॥ वै॥ क्रौ॥ क्रौ॥ क्रौ॥ क्रौ॥
कै॥ कै॥ कै॥ सफकातिमहाम
नु॥ वेलाकमरुनकुसाय
स्वाहा॥ धात्र२॥ सिवदा
य॥ लाथनदसावकंदय॥
॥ खचुन्दमूलमनुनदय
॥ ॥ प॥ धात्राहायक
॥ ॥ स॥ का॥ नि॥ वि॥ स्य॥ हय
॥ क॥ य॥ व॥ द॥ क॥ ग॥ द॥ या॥ गि॥ नी
॥ ॥ व॥ क॥ ना॥ दि॥ ॥ नु॥
सि॥ ना॥ द॥ दि॥ ॥ नु॥ द॥ दि॥
१०॥ द॥ उ॥ का॥ दि॥ १०॥ हूँ॥
कूँ॥ व॥ ना॥ य॥ स्वा॥ हा॥ ॥ हूँ॥
कूँ॥ व॥ नी॥ स्वा॥ हा॥ ॥ हुँ॥
क्रौ॥ न॥ वा॥ यो॥ स्य॥ म॥ नु॥ सि॥ दि॥
न॥ म॥ स्वा॥ हा॥ ॥ ॥ द॥ ह॥
पा॥ न॥ ना॥ य॥ स्वा॥ हा॥ ॥ ॥ हुँ॥

कानापातनाय स्वाहा ॥ ॥
॥ उं व हि द्यो वा द्यु मय स्वा
हा ॥ पू ॥ श्री ॥ अ न ॥ म न्द्र
॥ उं क्रीं क्रीं श्री गिरवा स्व
वृन्द महर्षि नवाय स्वाहा
॥ ॥ मां सा रु नि पू ॥ ॥
श्रु वा स पं व धा ना या कू उ न्
धाल नय ॥ पू ॥ श्री वा ॥ ॥
दिग् दाल वै व सर्व गदा व दू
क स द थानि नी रु य पाली
ध डि त्या सर्व द वा स ग द ग
दा यूर्त म गु ली व न्द व क्रीं ॥
ना र्क्ष यू कं व पू ॥ श्री नू लि व
लि स हि नं प ध र्पा ना दि यू
कं स उ द्वा सर्व द वा नू गिः
नि मू ख यू ना पा तु कू कू ॥
नी स ॥ मूल म न्द्र वा स्वाहा ॥
ध रा स्व ग्ग लं हि स मून ॥
॥ ॥ ला व लि स कू का ट

नय ॥ देव सु द व न व लि स
कू का ट ॥ ॥ अ न्द्र वा य मू द
न या धा ला स वा द लू य ॥ व
लि स स म य न य ॥ नू नि स
व्वा य ॥ प ॥ धा ला द्वा या कं
ध नं ॥ क ड मान न्ना दि न ॥
स म य वि स्त द य ॥ स्व ला मू
ल डा ॥ न र्थ न ॥ श्री नू ॥ ना
ला दि ॥ पा ० या व क ॥ पा
० या दा या न नू रु नि वि य
॥ ॥ न ना व न्द वी दि वि
य ॥ वै ॥ गौ गौ गौ गौ गौ
श्री कूल ग ॥ ल व ना य स्वाहा
॥ दै ना स्वा स्वा द द ॥ र्वी सु मि
न रु व रु यं सर्व वि प्पा न का
या गौ गौ गौ गौ ॥ ग ग ग
ग ग नि ग न सि धि स वी र्थ दा
य ॥ उं श्री मू डा ग डा र्क्ष ग रा प
म न ग न न्ना ख्या न क द म

ॐ क्रीं क्रीं हां गं गं गं गं
नमस्वरस्य गं गं विष्णुनाथं
नमाम्यहं ॥ ॐ श्रीं
वां वां वूं वूं वां वं वं वं वं
वद कनाथ स्वाहा ॥

॥ वां वां वूं विनाह सुवा
वी वूं वं वं वं वं वं वं वं वं
मूड क्रीं श्रीं श्रीं श्रीं विनाह
मू किंदलं ॥ हं हं हं हं सा वि
धनल वन पद गतं मि
दिदा वाम मार्ग ॥ क्रीं क्रीं
क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं
विपुल वीर रुद्र नमस्का ॥

॥ नमस्कृत्य पाला
य स्वाहा ॥ पिशा दीवक
क्रीं किनि किनि नवलं
किं किनी मात जालं डं
क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं
रुय रुय पाय रुय रुय

दां शुभं क्रीं सिं रुना दं नमः
वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त
रुत प्रतादिनाथं गृह गं
नमिर्न रुत पालं नमामिः
॥ स्वाहा ॥ ॐ श्रीं श्रीं
नी स्वा स्वाहा ॥ सिन्दूर पूं
सदृशं नन वा नन वा नन वा
मवा वं वं वं वं वं वं वं वं
ला काशा धता वं वं वं वं
ष विन्दु रुता रुत रुत रुत
सर्वं कूल योग माता ॥ स्वा
हा ॥ ॥ पूवा विदी ॥ प
ना सि स विध ॥ ॥ नै नै नै
नै व प्राय दी नै सि नै नै
है न वाय स्वाहा ॥ ॥ नै नै
प्राधी वन वा दना न्द वद
नी हं ॥ ॥ सि नै नै नै नै
रुत रुत रुत रुत रुत रुत
लि कल्यादी कालं कलि ॥

॥ सुवर्णदियि च यकादपि
दवापीनामदासर्वदा नदि
वीसतननमामिसि न सासंसा
नसा नखदा ॥ स्वाहा ॥

नायविदि ॥ नूकसिसमि
ध ॥ जे ॐ ॐ के माह ॥ वनी
नूक न वाय स्वाहा ॥ जे नू
डापी नूक न जि न धि नम
ला कवा रु मदी ॥ रु क नी

कनहीष ॥ दि कलया ॥ ३३
आन नूजामदि ॥ नूक
कला गदी प्रथि नदि विप
लं मालिनी नदि वीसतनन
मामिसि न सा सा कानि संगा
पर ॥ स्वाहा ॥

॥ लपूवी
दि ॥ खयल सि समि धा ॥ जे ॐ
ॐ ॐ के मागी वपु न वा
य स्वाहा ॥ ॥ को मागी धि
वि मासन कू नया शक्ति

धना सुन्दरी सादवी सुवर्म
नूह सुन गले संपूजि नास
वदा ॥ सार सा न सुवर्णि नगु
धनि ॥ सो सुग्य सिद्धि कलि
नदि वीसतननमामिसि न
दा विड दूख प्रहा ॥ स्वाहा ॥

॥ मूगवी दि ॥ वन ग न
सि समि धा ॥ जे ॐ ॐ के मागी
वी का धरे न वाय स्वाहा ॥ जे
नी ख वक्र मनू र्म कन
लय साग दा दे ल हा ॥ वञ्चो
क पूरु न न नल निक न वि
नू स दा ला कया ॥ ना सान व
हु भय वरु निलया वि ॥ ॥
॥ वनी वेषु वी नदि वी सि न
सान मामि सन न वि ॥ ॥
ना का विनी ॥ स्वाहा ॥

॥ मासवी दि ॥ दू व न सि स
मि धा ॥ जे ॐ ॐ के मागी
दीड

नमस्तु नवाय स्वाहा ॥ ॥
 ॥ वा वाही व नृणां लया गत
 व नी प्राप्तेन रु मि धना उ
 ए आ न वि घाट धा न घट
 न सं भ न वा य र्चनी । सं ग्र
 भ वि द ग स्त न स्य म रु य द
 व स्य पी ठा नू जा ता न्द वी स
 न नं न मा मि सि त सा वां च
 ध सि धिं क मि ॥ स्वाहा ॥ ॥
 ॥ क उ गु लि वि दि ॥ सा मि नी
 सि स मि ध ॥ जे जे जे जे जे जे
 ही क पा लि सं नृ न वा य स्वा
 हा ॥ जे जे जे जे जे जे जे
 प्र व लि ना ल श्री प्र ना पा कः
 ला व र्क कृ प सु म र व ला ध
 न व ली क न प्र सा मा लि नी
 । कृ ष्ण पी ० वि शु द्ध द न्द नि
 क र्ते स दी पि ना स र्व द ॥ गां
 द वी स न नं न मा मि सि त सा
 सा का लि स र्व य हा ॥ स्वाहा

॥ ॥ न्वा न वी हि ॥ व द ॥
 सि स मि ध ॥ उ डे यं वा मू अ
 ही व द र्हे न वा य स्वा हा ॥ ॥
 वा मू अ व ल व र्म मू उ ध न
 ष ड् सा ही ष नी ग्रा सि नी सा
 इ नो वि न र व र्म व र्म ध नू ष ड्
 वृ षां कृ षा धा मि नी । गां द वी
 स न नं न मा मि सि त सा ही न
 र्थ रु य ना स नी ॥ स्वाहा ॥ ॥
 ॥ च का वी हि ॥ कृ षा स मि ध
 ॥ नृ नृ ४ णं स हा व र्हे न वा य
 स्वा हा ॥ ॥ ॥ या ग णी रु वः
 (दी ष्ठ गी सू व व लि सं ग्र म सिं
 हा क लि य रु द्ध मू नि द व किं
 न न न र्ते स पू डि ना स र्व द ॥
 जा नि व म्भ क व र्मि का ल क
 ट या पू ना ग ना ग र्म क र्म तां
 द वी स न नं न मा मि सि त सा
 ल श्री प्र ना पा क ला ॥ स्वाहा

॥ प्रकाशो दि ॥ सुं कूड ध्वना
य स्वा हा ॥ स्वा मा न का ॥ ॐ
हो के नि ॥ ध न न व मा रु के
॥ ॥ प्रकाशो दि ॥ सुं ॐ
द्रा य स्वा हा ॥ जे ना व न ग ज
नू ड सु रु मा दि सु न ध्व नी ॥
पी न व न म हा न ड व ज पा
नी न मा म्य ह ॥ स्वा हा ॥ ॥
प्र का शो दि ॥ नू (न य स्वा हा
॥ नू (न नू र्ज स ना स्वा य म ह
न ड सु मू रु वा काला मा लाः
वि रु मा य धा कि रु रु न माः
म्य ह ॥ स्वा हा ॥ ॥ ति सि
वी ही ॥ कू ग सु मि ध ॥ मू ड
मा य स्वा हा ॥ म दि म सुं क
ता ना य ड उ रु रु रु य क न
का पा ल पा ध ध र रु रु धा
य रु कि रा दि गु प ति ॥ स्वा रु
॥ ॥ का ला न वि दि ॥ क
ने ग ला य स्वा हा ॥ नि ग ल

नू सि रु ला य धा न व विः
क ना न नी ॥ व क न य स मा नू
ट नी ला त्य ल न मा म्य ह ॥ ॥
स्वा हा ॥ रा य म ल वि दि ॥
वू व नू ला य स्वा हा ॥ व नू न
म क मा स्वा य सु रु प्र रु नि
रु व नी ना ग पा स ध र रु रु
न म रु रु नि दा य क ॥ स्वा
हा ॥ ॥ नू वि दि ॥ य
वा यू व स्वा हा ॥ वा यू व ध
ज रु ला य ध र व ॥ सु व श
प्रा प क ॥ प्रा ल रु रु रु रु
ना रु नि ल रु न मा म्य ह ॥
स्वा हा ॥ ॥ रु नि वी दि
॥ सुं कू व ना य स्वा हा ॥ कू
व न म रु मा सि नू प्र व ना
उ म हा रु नू ॥ सु व रु न क
त रु रु प्र ल म्य मू ल ना धि
य ॥ स्वा हा ॥ ॥

पञ्चमासवीदि ॥ इति ॥
आनाय स्वाहा ॥ इति ॥
संकर्तव्यं नित्यं सर्वरुतस
दाति वा ॥ कासस वीगुरु
घायः शूनयानी न माभ्यः
ह ॥ स्वाहा ॥ ॥ त्रुन
वीदि ॥ ॐ त्रुन नाय स्वाहा
॥ त्रुन न पूषु नीका देह
आदहा सुत शर्त ॥ विद्युदा
स प्रतीका सः कृष्णान्द्रुप
पूजयेत् ॥ स्वाहा ॥ ॥
पूर्वावीदि ॥ ॐ वक्रलोस
हा ॥ पीनपीनं वलुष्टा द्रुव
आनी वलुष्टान नी ॥ हः सः
यानं ववित्रामंदं जक्रु
कमउत्तर ॥ ॐ नित्या कपा
ल ॥ ॥ यन्महते कादि
॥ सावीदि ॥ इति ॥ कुरु न वा
य स्वाहा ॥ ॥ ॐ न मर्त्य

महारु न वाय ॥ श्रीनाथ
वृक्षरुड दिन कन किन
न वन्द विमं लला नैला
नन्द दिव्य पीथं वदु विध
यति नं सर्वमन्त्रादिभ्यः
॥ नैपत्य रुयागं ग्रहण
दीनं मे न पाव न कुल ड
इति ज्ञाना वृडा वगव रु व
रुयुरु न दी रु न वं मु न
मा मि ॥ स्वाहा ॥ ॥ सावी
दि ॥ ॐ विप्रान्तर कुरु न वा
य स्वाहा ॥ ॥ मुप ॥ यत्न ख
दा न हर्ष पून व पि रु ज
न पाठमर्क विष्णु ललाः
पालीख न हर्ष मन्त्र स
दि नं वा मरु हर्ष पि ना की
वडा वरु रु माली विक न
न नू नि वं सु फ वरु य वी
नं का ली का लान का ली रु

रुवरुयरुवनरुवनरुवन नवन
मामि॥ स्वाहा॥ ॥ सावी
दि॥ ॐ नमिदनालरुवन
यस्वाहा॥ स्वाहा॥ नीलाङ्ग
मूककल्लसकल्लमिवमय
रुवनरीमनूप्योदयोडा
वतारुवल्लितमिखिमिखा
मूर्धकल्लनड्डु॥ हीमा
ङ्गम्रीमनादकिलिकिलि
नवननार्द्धपादानासाक
कालामालकमालरुवरु
यरुवनरुवनरुवनमामि॥
स्वाहा॥ ॥ सावीदि॥
ॐ नमिदिकारुवनवायस्वा
हा॥ स्वाहा॥ सिद्धान्तकोन
मालेविकूलकूलगतमनु
मनुसमकावदोप्रकाव
नानविविधगुणमनसक
ल्लप्रसिद्धरुवज्जपा

लक्ष्मीववनसुष्ठुठिकाम
अनपादलपसर्वन्यरु
समर्थरुवरुयरुवनरुवन
वननमामि॥ स्वाहा॥ ॥
॥ सावीदि॥ ॐ काराकरुन
वायस्वाहा॥ स्वाहा॥ ॐ का
नेधावननादेववनदीवशम
ने॥ सागवमनूलीलवसा
पुंखपुंखपुंखसूठिककद
कलामनुधावाहलसीख
अकापालरुसुठिमठिम
सुदिननागवमोवगुं॥
क्रौंक्रौंक्रौंमदमदकयमति
दुलिनरुवनननमामि॥ स्वा
हा॥ ॥ सावीदि॥ ॐ नोके
लिनरुवनवायस्वाहा॥ स्वा
हा॥ ॐ कालकालनादकि
लिकिलिसुदिनरुवनना
लनार्थक्रौंक्रौंक्रौंसघपूथ
रुवरुयरुवनरुवनरुवन

मामि॥स्वाहा॥ ॥सावीदि
॥ॐ॥चक्रपादहेववाय स्वाहा
॥शुभ॥केलागमवृष्टिग
दिगिदिशिगमनदवदेत्य
उकस्यपातालमहासाकड
लनिधिपतिनेसागरसर्वती
र्थोसामसूर्योमिवायुग्र
हगहनिलयदीपकवान
नीयसर्वसामसूपूर्णरुव
रुयद्वनहेववर्तनमामि
॥स्वाहा॥ ॥सावीदि॥ॐ
हीमवृष्टिहेववाय स्वाहा॥
शुभ॥वक्राक्षपद्मदह
पिदठागदमयसामसूर्यो
दिनूपन्नाकाक्षीवायु
समपिधनवीस्रसमूर्तिः
विमूर्तिपी॥ॐमन्यरुह
रुसकलशिवमयसर्वभाग
प्रधानसर्वज्ञज्ञानरूप
विविधविषद्वनहेववर्तन

नमामि॥स्वाहा॥ ॥सावी
दि॥ॐ॥हातकहेववाय स्वा
हा॥शुभ॥कुरुपी॥ॐपपी
॥ॐ॥विशुववनिलयदिवाव
डाकवन्दवा मूलावीवरु
इगुणगुवसदिनरुतवः
तालनाथविद्यानसर्ववी
र्यविशुवननमिनरुप्रपा
लाककेध्वरुक्तायकेनम
नुरुवरुयद्वनहेववर्तन
मामि॥स्वाहा॥ ॥सावीदि
॥ॐ॥कूर्मपृष्ठहेववाय स्वा
हा॥शुभ॥त्रायुष्टीवर्द्ध
सिद्धिपुल्लगुदामयसर्व
कल्याणवृद्धिसंकल्पसर्व
प्रागमनिपूनमन्योदवतु
ष्टिपृष्टि॥सौराग्यवाकसि
द्धविषमविषद्वनज्ञानवि
ज्ञानभादकर्मरुतसमग्र
क्रमविविधकर्महेववर्तन

मामि॥ स्वाहा॥ ॥ सावीहि
॥ उँसंदावहे नवाय स्वाहा॥
शुभ्र॥ श्रीवृक्ष (म) कं पत्र
मष्टु रुक नरु नव स्याष्टम
नुं शय निर्य समन्ता इति न
रुय रुन निर्विकल्पं प० नि
। न साव स्य न नन्दा ४ कनक
मय धराया विना ४ सन्तिल
श्री ४ सुंदरा राग्य विद्या मय
विपूर्वदा विडवं यानि सुर्व ४
॥ नू ति श्री वृक्षा विन विनः
महाहे नव समा क १॥ ॥
॥ नू सिना क्का दिया ॥ पू वा वि
दि ॥ प मा ख सि समिध ॥ जे ३
नू सिना क्क हे नवाय स्वाहा॥
तिला क्क ति ३ ॥ घ ना क्क ति ॥
सुर्व क्क प्रादि नाथं वदू कम
पिक लं निस्क लं निस्क लं क
० लं लं लं काल वीडं क्क ति क्क
सि स धर्मा गत्व रूप स्व रूप

विस्थष्टवान् हासं रु सिगः
शन मिर्न नागय क्का पवी नं
त म्ब न्द हे नवाय स्वाहा म नः
सु न नं हे नव नं न मामि ॥ स्वा
हा ॥ ॥ गायत्री हि ॥ नू क्क सी
समिध ॥ उँ नू नू हे नवाय स्वा
हा ॥ शुभ्र ॥ पिं ग म क न क क
० कि दि कि सि न व वं कि कि
दी माल जालं उँ श्रु श्रु नो ड
हा वं क्क लि न वि प्र रु नं पा प्र सु
ला क्क रु स ॥ सिं रु स ॥ सिं रु ना
दं न व व व व व वं म म्ब वं वा
म ग लं नं व न्द हे नवाय स्वा
न म न सु न नं हे नव नं न पा
ल ॥ स्वाहा ॥ ॥ नू पू वि
दि ॥ ख य ल सि समिध ॥ उँ
व नू नू हे नवाय स्वाहा ॥ शुभ्र
॥ क्क लो नं काल नाथं क व न
निरु म यं क म्ब म (ध) ष्व वं द
रु क्का वं वाल हा वं रु य वि क

दुर्नरावगन्धारुवाच्या॥
लोडससहस्रवदतवपू
षस्यसस्माविरावर्मर्म
मायवृष्यपलमतसननरु
वर्वरुप्रपाल॥स्वाहा॥

॥मृगवीदि॥डालंगतसिम
मिध॥ॐकाधरुववायस्वा
हा॥श्री॥वामाकासविन
जंरुवद्विनपतिमयवर्ण
सूडिफिन्नरुसिद्धाकलीना
दनुजविजयनमृगुमालावि
रूपा॥रौद्रौरुवद्वरुसंका
नितहयविपूकाधनाथपू
जग॥नवन्दरुववादीपल
मतसननरुवर्वरुप्रपाल
॥स्वाहा॥श्री॥

॥मासुवीदि॥द्वैवमसिमि
ध॥ॐउन्नरुववायस्वा
॥श्री॥नागक्रीजानूठक
सिन्धुसिन्धुशिकलानागहा

वसुक॥ॐखद्वारुवद्वरु
धनकरयवर्णनागयक्ष
पवीन॥वर्ववकालवृषस
कलविषद्वववादीपल
नत्वंनवन्दरुववादीपल
मतसननरुवर्वरुप्रपाल
॥स्वाहा॥

॥कउगुलि॥
वीदि॥सामिनीसिमिध॥
॥ॐकपालीसरुववायस्वा
हा॥श्री॥निद्वंद्वनि
विकल्पनिवतिसयगुनः
सिद्धिवागसार्वसतायः
मन्तसिद्धिसदुजगदुगु
नूवृद्धरागन्धसत्त्वा॥यंयं
यंवायूनत्वसजमूकटधन
वृक्षकापालद्वरुनवन्दरु
ववादीपलमतसननरुव
वर्वरुप्रपाल॥स्वाहा॥
॥मृगवीदि॥वउसिमि
ध॥ॐरीषलरुववायस्वा

ह॥ प्र॥ सिद्धिर्पादनाय
 रुमिति मति कारुण्यवानना
 थ॥ श्रीमाकलप्रिनगारुवद
 विनपनिमधवर्गसूदीफि॥
 सौसौसुंमनुमूर्तिरुवरुयस
 मनसिद्धिद॥ साधकानर्तिव
 दरेववाक्यप्रणमतठागतं
 हेववर्गयपाली॥ स्वाहा॥
 ॥ प्रकाशीदि॥ कृत्स्नमिध॥
 ॐ संस्तुते वाय स्वाहा॥
 प्र॥ हूँ हूँ कारुण्यकारुण्य
 रुद्ररुद्रसिगमन्त्रव्याम
 तत्त्वमूर्ध्निमूर्ध्निग्रहसुक
 लरुयद्वर्णपावननागनासं
 ॥ पूर्णश्रीवर्द्धनीयं सुवनव
 सकलीरुतसंस्तुतवृषणं व
 न्दरेववाक्यप्रणमतठागतं
 हेववर्गयपाली॥ स्वाहा॥
 ॥ ॥ स्नानवाशीदि॥ स
 मिध॥ ॐ कौं कौं कौं स॥ न्नादि
 त्याय स्वाहा॥ नकवर्गमः

हानं नकपद्मशुभनर्क
 सफाश्ववधना नूटग्रहना
 जनमाम्नाहं॥ स्वाहा॥
 शायमलवीदि॥ ॐ श्री श्री स
 ॥ सामाय स्वाहा॥ नमः नैष्ठि
 मदानं पृथुनीककनाधनी
 दंसासनस्तिर्नंदवनमामि
 ननन्दन॥ स्वाहा॥ ॥ पल
 कावीदि॥ ॐ नमः वाय स्वाहा
 ॥ कृत्स्नवर्धनदवगकिद
 रुद्रना सनीनादिना रुमहा
 नं नैष्ठि सुतप्रणमाम्नाहं॥ स्वा
 हा॥ ॥ प्रकाशीदि॥ वा
 वीं वीं वीं स॥ वृधाय स्वाहा॥
 पद्मासनस्तिर्नंदवसामप
 यशु॥ ॐ हिननावायत्त
 धिदवर्धनीवर्द्धनूपनमाम्ना
 हं॥ स्वाहा॥ ॥ नक्षत्री
 दि॥ ॐ कौं कौं कौं स॥ वरुण
 नय स्वाहा॥ वाचस्य निमह
 दीर्घिपीनाम्वनविरुचिनी

महाया

यन्ममस्त्वया सदवता ॥ स्वा
हा ॥ ॥ कञ्जुलिबीदि
॥ एह नूमानाय स्वाहा ॥ न
कवल्महातङ्गवायूप्रयति
सावनीकन्दमूलरुलीप्रीति
रुनूमानायवेनम ॥ स्वाहा ॥
॥ ॥ म्वातवीदि ॥ पोतस्य
जातिनमस्तु सत्कृपास
नवमुमी ॥ नारुसाधियतिद
वन्ममस्तु विहीषता ॥ स्वाहा
॥ ॥ मासवीदि ॥ उं कृपा
वाय्याय स्वाहा ॥ नाजम्बिन
मस्तु सत्कृपासदाहवा
कपस्वयमिमाउहाधीना
रुवतिविक्रम ॥ स्वाहा ॥ ॥
॥ मूंगवीदि ॥ उं यनष्टुनाम
य स्वाहा ॥ कालिकावीनन
स्थानि पनष्टुहस्तमहावस
॥ निरुपीप्रकविंशत्वायन
शुनामायवेनम ॥ स्वाहा ॥
॥ ॥ नन्दावीदि ॥ उं माः

कौण्ड्य स्वाहा ॥ वटवस्तु
मानूटवस्तुमकंठवाससा
॥ नाजम्बिनमस्तु सत्कृपा
॥ उयायवेनम ॥ स्वाहा ॥ ॥
॥ धनदवीर्मसावीदि ॥ ॥
॥ दहापातनाय स्वाहा ॥ ॥
॥ कामापातनाय स्वाहा ॥ ॥
॥ उं क्रौरु स्वाहा ॥ उं क्रौरुवस्तु
हा ॥ उं क्रौरु स्वाहा ॥ उं क्रौरु
नस्तु नारुतिविय ॥ ॥
॥ उं ह्रस्वाहा ॥ धन ३ ॥ ॥
नारुवस्तु नारुतिवियम
नु ॥ उं क्रौरु क्रौरु नारुवस्तु
नुसिद्धिनस्तु स्वाहा ॥ धनः
५४ ॥ दहापातनविय ॥ ॥
॥ उं क्रौरु रुवस्तु नारुतिविय
स्वाहा ॥ नारुतिविय धन ॥
१०६ ॥ ॥ नारुतिवियम
नु ॥ दामपातनाय स्वाहा
थस्तु पदुय ॥ ॥ पूष्टिक
धन ॥ उं क्रौरु नारुतिविय

॥ ॐ क्रौं सा मा य स्वा हा ॥ ॐ :
क्रौं नू मि य स्त्रि सि क न स्वा
हा ॥ थ ना द ठा व सि वि य क
॥ ॥ ग ल व दू क रु य माल
या मि नी ॥ ॐ द्या दि ॥ रु उ क
दि ॥ नू सि मा रु दि ॥ ऊ या दि
॥ व क्रा रु दि ॥ मा ल का थ
य वि रु ष न दान क ॥ व सि
वि य ॥ नू रु मा दि ॥ ओ स रि ॥
म हा व सि ॥ थ न व सि हा य
क ॥ ॥ नू वा य पू डा ॥ ॥
॥ प्रा य वि रु हा म क त्वा ॥ ॐ
क्रौं लं स धा डा ना य प ङ्गि म
व क्रा य स्वा हा ॥ ॐ वें नू धा
ना य द कि ण व क्रा य प्रा य
वि रु षा य स्वा हा ॥ ॐ क्रौं यं क
लू नू प्रा य पू र्व व क्रा य प्रा य
वि रु षा य स्वा हा ॥ ॐ क्रौं कं नी
म ना य दु र्ध व क्रा य प्रा य
वि रु षा य स्वा हा ॥ नू रु मि य
य वि रु षा म ॥ ॥

॥ स सी स रु (ग) ल का मा व थ व
ज व स न या व सु क न न य व
क र धी ॥ नू रु मि य प्रा य ॥
धू न ना व द व नू य स द न सा
व रु क ॥ न द न सा व व सि
स न य ॥ ॥ न ना ज व धा न्या
दि वि रु षा य ॥ ऊ व न रु ॥ धा
न्या स्वा न वा ॥ ला डा ना य ॥ स
मि धा ॥ मि न पि ॥ गु ला ठ न ॥
वा कू डा ॥ वि रु रु ल या ल ॥ रु
प ल प म नू ॥ रु रु द वी स म नू
न धा व २० ॥ रु रु न्द म नू न
धा व २० ॥ नू रु म नू न धा व
२० ॥ द (धा) द न धा सि डा ॥
व द सि रु ल ॥ क ल स ॥ प्रि य
गु ॥ स मू ख ॥ ग न पू षा ॥ रु
न निल ॥ रु य रु हा म ल ॥ क मू
निल ॥ रु हा म ल ॥ न क निल ॥
क्रा ड रु हा म ल ॥ म व व ॥ पि प
ली ॥ गु रि ॥ प्रि क दू ॥ प्रि रु
ला ॥ रु ल व रु ल नू व ल ॥

वृषकर्म॥ पञ्चकर्म॥ व
दनगुलि १०८॥ नृगुलि॥ गु
गुलि॥ श्रीरघु॥ कर्म॥ कर्म
व॥ सर्वविधि॥ कर्म॥ मूल ८
न॥ रुतयकावान॥ १०८
॥ पूर्वदिन॥ पयस॥ नीयाः
दाहल॥ १०८॥ नीयान्नाक
न॥ १०८॥ नृधर्मप्रसन्नमा
व॥ नृक्षारुवर्गर्गद्वयान्
॥ धाम १०८॥ ॥ नृनर्म
कल्या॥ ॥ कर्मात्मासपू
०८॥ नृनिसयादाव॥ गम
यप्रान्तपलपे विधा ३॥ न
प्रसुलिम्याससतम॥ धव
कसावर्कद्वय॥ स्वच्छन्द मू
लमन्त्रन॥ मूलमन्त्रनघना
द्वि ३ विय॥ ॥ वहिका
म॥ ध॥ क॥ अग्निकान॥ नृध
वलि॥ वहिर्वलिदद्यात्॥ ॥
॥ ॐ क्रौं वृद्धास्वाहा॥ पूर्व॥
ॐ क्रौं मातृस्वाहा॥ दक्षि

ध॥ ॐ क्रौं ग॥ स्वाहा॥ प
द्मि॥ म॥ ॐ क्रौं य॥ स्वाहा॥
॥ उरुव॥ ॐ क्रौं ग॥ स्वाहा॥
दा॥ ॐ क्रौं न॥ ॐ क्रौं नृसूत
स्वाहा॥ नृग्न॥ ॐ क्रौं नाः
कर्मस्वाहा॥ नृम॥ ॐ क्रौं
नागस्वाहा॥ वायुव॥
ॐ क्रौं न॥ स्वाहा॥ नृ
सूतवर्गमन्त्र॥ ॐ नासु
स्वाहा॥ न॥ ॥ ॐ
क्रौं विष्णुग॥ स्वाहा॥
रुद्रम॥ ॥ ॐ क्रौं क
प्रपास॥ स्वाहा॥ वृद्धा
॥ ॥ निसयाम॥ ॥ ॐ
नृनुतवलि॥ ॥ वहिर्व
लि॥ ॥ ॐ द्यादिसाकपाल
नवलि॥ ॥ नृवायदक्षि
मदान॥ ॥ दद्यावलि वि
सर्जनी॥ ॥ पवितासपू
जाय॥ पूर्व॥ नृनिस
वियमन्त्र॥ ॥

॥ॐ क्रीं क्रीं क्रीं श्री स्व न
महा रुं न वायवा हा ॥ ॐ
न ॥ ॥ स्व स्व दती म
नु ॥ ॐ वा स व न सिं धन न
इ वा न न य ॥ का डी स्नान म
न न य ॥ ॥ ऊ ऊ मान स
ध व क जी न के ॥ ॥ न
वा न न सु वा जी न ॥ ॥
॥ पू र्ण वा क ॥ नू स न ज
ऊ मान स ऊ न वि धि (ध)
वा क ॥ ॥ व ध्वा ख द्वा क
है कौ क पिल मू रू ज न
म गु लं प य यानि ४ क त्वा
द एा रु मा क्क ठा ड मू न सि
सि न ४ (४) म य ना क प द
४। पू र्ण न का स वा यो ४ यो
म म हि स म हा ४ टी ग मा द
य पा (४) पा या दा वं य म
न ४ प र य म दि न त्वा र्क

व व का ल वा या ॥ ॥ ॐ
वा नू (ध) मू र्ति क त्वा ॥ नू
ग्र स म गु ल द य क ॥ स्नान
क वा य ॥ ॥ स्व स्व द
वी स म्भु प्र ॥ ॥ नू र्ण स
प द प ॥ ॥ ॐ न म ४ श्री
महा रुं न वा य ॥ स था जा
न ठा ४ म क्क (४) व द न
स व प्र का मा प द ४ ग
त ल लि त स सो म्भ व द न
धा न मू र्ख द कि टी ॥ पू र्ण
न त्प नू र्ण गु ४ म न व द न
व म्भे न्द या (४) व न उ र्क
मा क्क प्र द स ४ म न व द न
४ म नं गि वं सा स गं ॥ पा न
स व न हा न के व न मू र्ख
ना (४) न स पू जि न नि र्ण
नि र्ण स ना स न म्भु ति प द
प र्ण र्ण र्ण का व र्ण स व

गुणालक्षार्कं दद्यात्तनयने विग्रहं कविनाम् ॥ १ ॥ अथाश्लोक
पासास्वस्वदिगवसिगास्वस्वम्पास्वयुक्तांशदिग्रहासावस
मिनुविमुदाऊनमदबीस्वन्पाप्मदाभागमस्वतिथ्यां गवयमुन्वद
कः ॥ सुलुल्यमारुकावसिम्हिप्रथाददातुरुवतुवसुमति यस्तु
॥ १ ॥ सुस्तु ॥ ५ ॥ न जाख्यं दानि विध्वंरुवकत्तषट्पणवने
रुतुवस्वः सुवीर्यं वाफविध्वंमुनिऊननमिर्गहास्वर्गं यकिहं
ऊनोवास्यननात्माकनमपि नि कर्म ॥ १ ॥ अङ्कानि ॥ १ ॥ अं व

न वत्सोष्ट्रं कथं द्विज निखिलगुणं साविकर्षं रुवर्णं ॥ गानक
 शुक्राजिकृष्ण जिपदप० गगनीनिधवाजि मागतत्वा गत्वानिया
 न्नित्रकुलकुलगङ्गानिलयकात्प्रभाधम। गान्धर्ववात्त कच्छाज
 यजि कनदिगानिलयकात्प्रभादा मागबदोष्टु गारुडयष्टपत्र
 मयानिलयनृपानि वासा ॥ ६ ॥ दुर्ध्वविधाकु रवधुसिततलग
 दां हानकात्सन्दवीर्दं वा नृध्व वद्वि वीर्यं प्रवनसदृशं सार्द्धं मू
 काले वत्सो सुवर्णध्वनध्वन ममृतमयगनूं निएहो नश्चर्वनं

कृष्णाय हुनुपापं ददति वनसुखं सुतु दागाश्च लक्ष्मी ॥ १० ॥ वनं
 नो वदति नानेन सपनपयदी सैनमक्रुरुनाके सर्वोक्तुस्वत्यमने मसून
 पनपदधानपापाप्रधर्मासायं ओदवदद्यात्तस्मिन् न दत्तमाहु किं न
 मूर्किदाव ॥ १० ॥ अकं चास्ववने न सविधितु निकायादका हूवने
 त्वे पातात्तीदिवा सिद्धि जिह्वनसुदिनादिवा धिन्नामलिष्यासिद्धि
 दिवा सधीना पनपूवयसुर्नगमनूडे मनु पार्जनं न दद्यात्तसादात्स
 रुवति रुवता मग्निदावा सुन ॥ ११ ॥ वक्राविष्णुं च शक्रा कस्तुति

प्रा

नि १

असुना न कृष्णानि समील ऊको स्थानन दग्धर्मा गुरुगक्षसदिनसंय
 ना सर्वनाम्ना रुनन्वा सिद्धि संघादविन रुय रुनावन्दसु यो विदवता
 याग्नि आसर्वदवा सुनवनसुदिना पाहवा सर्वदवा ॥ १२ ॥ सफा
 वालसधमन ना रूत वदादवादि पूरुर्न गधना ना काम रुत्तमर्ग रु
 नयुर्न संपूर्ण काम प्रदी वधुर्वर्तु गि खनि विप्रकठि ट फि ८ सिद्धा
 नमाना विन दद्या ना रू निउस ददाति रुगवान् सानन्द नू प्र शिव
 ॥ १३ ॥ नू न्यादि सो कपा नो ग्रह युग सकला दानवदि समस्तान्

सन् यद्दृष्टं त्रिभुवनं तदा ददवीयसन् नानाविधिप्र
नं ममद्रविनद्वैमन्त्रमूत्राविशोप्येन सवर्धकमार्थेपरु वतुरुव
नाद्रुसं पूरुमेवा ॥ १८ ॥ यथैकं ह्यष्टं स्त्रिदिविदिनि समा
संस्त्रिगायवताय कूटुवावक्रिमध्वकलसपविगता मशु तस्को
त्रिसेवानसर्वसंतु देवा त्रिमत वनदा मन्त्रस कीषमूत्रा नूणमाः
यादिहीमायकपत्रिविविधे कीनदासाः कृमन्त्र ॥ १९ ॥ सन्त्रसन्त्र नि
नीनी सूक्तनिना वद्विष्यपापदया नाजान ८४ प्रतिपालयन्नि वसः

धर्मास्त्रिगासर्वदा काले संति न वधना ह्यममूचः सन्त्र प्रजा पू
न्यागा मादन्का धनवद्विवाध्ववसूद्रुत्तु गमस्त्रिः प्रभादानगा ॥ १९ ॥ स
स्त्रिप्रजास्यः प्रतिपालयत्वं धामयनमाग्नेयमदिष्टामयीवा गमवाक्
(वास्यः ८४) वन्त्रुनित्यं लोकानुसमस्तानुस्त्रिविनारु वन्त्रु ॥ कालेवध
नुपर्येनै पृथिवीसस्य सानिनी ॥ दधमयश्चा त्वेन हीना वाक्मधस
नुनिर्मुखा ॥ १९ ॥ सूधीना सर्वदेवाद्वि सुकलयुगा त्रिगि मूत्रानि
दत्ता कृत्वा प्रहसं स माग्नेयस कल ८४ रुदयं गमनिर्क प्रहिय स्या ८४ सना

षागण्यसर्वं नरि मगवनदा सुर्वे सिद्धि ददाउं स्मदिद्या नो मिरुक्
सकल सुनगध कल नूनी न म मु ॥ १८ ॥ देवा व धेनु काले उलय
ति वसुधा सस्य सं पुर्ण मूत्र कीना धा सी उगमवान य वि पू त म नि ४
पातु ना डा धा वि जी सी यो ना सा ध प्र ग्रा कल य वानि उ न या नि दा ष
विना सी सा काना रू कि रा वा प्र रु व उ वि पू ले रु कि श खा णि वा मु ॥
॥ १९ ॥ गृह्णा ना ह्म न गो वा क त म क ग य ध य के ना वा नि लि र्क मूत्रा
प्रजा वि धर्न क्र म न म न म लि भ्र ग क ह न सी ह ॥ य ह स ह्म न दो बा

दिह गरु वन ग र्ङ्गा न का ग म ग्नि त्वं न त्स र्ध पू र्ण स र्व कल न व रु न से
प्रां क लि स्रु प्र त्ना २० ॥ दा षे न मा र्ग न व रु कि रा वा वा प त्ने इ ४ स्व मू
ने प्र रा वी नू ना धि र्क म नू क या ध व म मू क म स्य द व ४ म म दो ष द
गा २ ॥ मू स त म नू य न स मु सु ख भ न क व पा ता य ब्र म्मा धा दि
मू णि ना स्म दि र्हे न वा य प्र या ग भ दि धा णि नी स दि गा य ग ध व द क र्क
प्र पा ल धा णि नी र्क य पा ता य दि गि वि दि गि न्द्रा दि सो क पा ता य
सू यी ना व न दा रु व न्द्रु ॥ क ल स्रु क लि त दि न्द्रो ना दि श्री म र्ण र्क या ॥

[illegible][illegible]

य ॥ नमो भूमीपुत्राय माहात्म्ये श्रीगणेशाय सुप्रसीता वसुदामा वक्तु
 ॥ श्रीकेशवाग्विभक्त्या सिकाय सुप्रसीता वसुदामा वक्तु ॥ श्रीश्रीश्रीश्री
 कंदव्या सुप्रसीता वसुदामा वक्तु ॥ ७३ रुममु सुवैजगुरु वक्ति हनुक
 दाषो नि ॥ पत्तयन्ति धमनि सुवैजगुरु सुवैजगुरु मखिन सुनु माखिगुरु
 रुममु माहाधर्मविजय नमु ॥ श्रीस्वामि श्रीमनु सिद्धि नमु ॥
 नमो भूमीपुत्राय माहात्म्ये श्रीगणेशाय सुप्रसीता वक्तु ॥ श्रीश्रीश्रीश्री
 नमो भूमीपुत्राय माहात्म्ये श्रीगणेशाय सुप्रसीता वक्तु ॥ श्रीश्रीश्रीश्री

॥ ईकानं वायू तीर्क्षणादि पदपाववियः ॥ कृष्णश्रुति सुद्रयः ॥
॥ दुष्कावादि द्रयः ॥ श्रुति सुतैर्जल कायः ॥ रुसना तिल के वडुवा
नमः ॥ चप स्फाळा वकायः ॥ श्रुति कान सु ॥ धर्म गे यः ॥ डव वा हा स
नयः ॥ नूग्न न स गे यः ॥ वसु ण ल स न यः ॥ ऊग्र माना दिन सक ले र्ध
वर्कः ॥ वस्ति वि सहै न यायः ॥ सुकाविही ना धत्त ना द्रयः ॥
॥ धम नूनः ॥ कुक्रौ गो नी नू नूग्न स्वा हा ॥ सा क्र ति ३ ॥ घ ना क्र ति ॥ क्षी
मयात्र नूधम् खी कत्या ॥ मिमा वै सूका कायः ॥ नाम्बू त ॥ ग्रह न तयः ॥

नन्दनमस्तु॥ ऊरुमानस्यसुगणप्रतिवागानिन्नायुताभ्या
मैष्ट्या॥ ऊनधनतुङ्गीर्षगतिर्षगानवृद्धिगस्तु॥ नाकाशि
पनभोऽयवपुत्रमरुलोत्रकशीशीन्त्रमूकमल्लोदवस्यखड्ग
सिद्धिगस्तु॥ ॥ त्वीगतिस्सर्वरुगानां सुस्त्रिणात्वेवजावरी॥ नूग
व्यासेनरुगानां दृक्पालेपत्रमध्वरी॥ ॥ क्रमनामनस्तवावाग
त्वेन्यादिगतिर्मम॥ मन्तुहीनीक्रियाहीनी॥ द्रव्यहीनीदुयकनी॥ अपक्ष
मार्चनीहीनी॥ कर्मनिरामयागव॥ मूकनीवाक्कहीनी॥ उतयपूर्वपत्रमध्वनी॥

॥ ह्रीं सिनाद्विनिमि सुमाफ ॥ ॥ अथावोदधमप्राद
निविय ॥ ॥ ह्रीं क्रो कप्रनि यखादु ॥ ॥ ह्रीं क्रो निननकायखा
दु ॥ ॥ ह्रीं क्रो सि सुनामियखादु ॥ ॥ ह्रीं क्रो क्षासाग्निषखादु ॥ ॥
॥ ह्रीं क्रो त्रिष्टिप्राग्नयखादु ॥ ॥ ह्रीं क्रो ह्यकादनग्नयखादु ॥ ॥ ह्रीं क्रो
क्षो ह्यकादनग्नयखादु ॥ ॥ ह्रीं क्रो रुतवाग्नेयखादु ॥ ॥ वक्रापनीत ॥ वे
दि ॥ ॥ ह्रीं क्रो नविस्वर्जनयाय ॥ वतुर्वेदि या कृष्णप्रच्छिन्नायाव ॥ ह्रीं
क्रो नविस्वर्जनयाय ॥ वतुर्वेदि या कृष्णप्रच्छिन्नायाव ॥ ह्रीं क्रो नविस्वर्जनयाय ॥

॥ मिसुनर्घपाआदकनकृष्णआमा ॥ त्रधम मूखी कल्पा ॥ ॥ ह्रीं क्रो
गर्भगर्भसूत्रप्रष्ट ॥ त्रासासीसात्रवारुना यजुवक्रासथादवन्
प्रगर्भरुगासन ॥ ॥ आसलिकाय ॥ दुधर्पा ॥ हृदयमन्त्रनत्रा
त्मलिना ॥ ॥ त्रग्नि कलसुविसुर्जन ॥ त्रमुमनुन ॥ ॥
॥ ऊरुमानस्वस्त्रिकसुन ॥ निवर्धुनादि ॥ दिपगारुनका ॥ कल
धमरि वरक ॥ ॥ सुव्यननायि ॥ त्राणिवोद ॥ धमक्रिपाया ॥ एवूडप
दादनीविन ॥ ॥ वृषी वन ॥ ॥ क्रुमानी जागपूजनविधि ॥ ध्यायार्क

॥ १ ॥ प्रहस्य ॥ नैवद्य ॥ द्याप ॥ मुनि ॥ हि सा ॥ सुमया ॥ हा ॥ ॥
 ॥ कर्तुं यत्कलसा ॥ नैका ॥ न पार्श्वे विय ॥ ॥ नि व नू दय क मा ल
 ॥ न प्योदा ॥ सुमय ॥ हा ॥ जय नि का ॥ कलं कान्नी ॥ द हि दम ॥
 ॥ न्न हि री का ॥ सु ॥ स न ॥ स्वा न ॥ न का न क ॥ स्वा न का या व विय ॥ न्न
 नि द्वा द ॥ कू मा नी वि स र्ज न या या ॥ ॥ अ य स क्क य ॥ सा की अ य ॥
 ॥ ॥ च उ र्थे पू जा मा ल ॥ हि सा स सि त न ॥ ॥ न्नि ति शी नि न द्वा मः
 पि द न वि चि सु मा फ ॥ ॥ ॥ च उ र्थे क क्क र्क

मया दानलि ख्वि सु था य क सु धाय ॥ धा सि वा च्चु वा न या व द्वा या
 ॥ त्र प सि ल हा म या ना व स प वि चि ॥ द खि इ ॥
 प च्च स म न शर ॥ ॥ ना ॥ थ ॥ डि सु ज का ॥ म उ ॥
 पू जा श ॥ ॥ ॥ क र म का पू ॥ तुं व न को ॥
 ना य श ॥ ॥ प च प्र ना का श र ॥ नू द वा ल पा ॥
 न न वा सु श ॥ ॥ क र्त्तु प्र ना का श ॥ ख डि क ॥
 ॥ ॥ प च स स्र का ॥ म र ॥ प व र्ग ग का पा को ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॥

लोमसि. कुच्छिदाक. ॥

सिमनायाथ. १३

॥ अथ ॥

ॐ श्री कृष्ण ॥

三
五
十

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॥

लोमसि. कुच्छिदाक. ॥

सिमनायाथ. १३

॥ अथ ॥

ॐ श्री कृष्ण ॥

三
五
十

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॥

लोमसि. कुच्छिदाक. ॥

सिमनायाथ. १३

॥ अथ ॥

ॐ श्री कृष्ण ॥

三
五
十

卷之四

三
四
五

天

卷之四

齊民要術

॥ ॐ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

समिधसिंयावासर्पिणा॥

五帝三

खण्डसिं ॥

वसुगुप्तसि॥

不可不記

पञ्चिंशत्

三

॥ १ ॥

१. व्याजसि

॥ सा म ज स ॥

शाल (मल)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

३५

॥

॥ ॥
महामल ॥
प्रियगु ॥
सुमुख ॥
मानयासा ॥
नृपकण्ठा ॥

पद्मकण्ठा ॥ कपू ॥
नालिकल ॥ जला ॥
उदालसक ॥ कमुनी ॥
श्रीखण्ड ॥ दीनशाल ॥
मृगुली ॥ मन्त्र ॥
कूकम ॥ पिपली ॥
सकाठ ॥ शु ॥

बहुल ॥
हल ॥
सुवले ॥
बालाख ॥
सिंघा ॥
असमीग ॥
मखान ॥

खानसिम ॥
सुसादका ॥
लेद्वामाध ॥
अत ॥
राय ॥
रुक्मवन्दन ॥
मंगलख ॥

पंचधननामसत ॥
हामपा ॥ ज ॥
सुसिमात ॥
श्रीखण्ड ॥
कमुनी ॥
कपू ॥
कूकम ॥

मृगुन ॥
शीले ॥
वाले ॥
कटासीसी ॥
धर्मासाकग ॥
दा ॥
पूर्वाकदे ॥

साइइ पा२॥
साधलि पा२॥
कौदु प्र२॥
पुल पाग ॥
कस्ति पु २ ॥
काई साक सु ॥

काई पाग का२॥
कूसाउ
त्रग पा तोम पा ३२॥
पय गले श २॥
डाहा पा दु का ॥
ले पा दु का ॥
खेति क १५॥

सिधु नी सुठ पा ॥
भल च्छु पाग १॥
नव सि (म ७) ॥
सिधु न नी ग न सु ॥
धु पा सु पल ॥
कल सु (म ७) ॥
कल पाग ॥

सिधु न मूठ ॥
कूक न रुवा ॥
सु (म ७) न ध लि पा ६॥
द कि ल म ल का ॥
म ता क कल ३॥
न ग म सु ग वा ॥
क म लो रु ॥

निव ॥
सुन्ध ॥
न वा ग
ना लि क त ॥
म ग व
नि पा वा रु ल १०६॥
नि पा न्ना खे न १०८॥

निव ग (म ३०) ॥
म ला नि व
दं द ३०
उ ग १
माल २
का प ला पा ग ॥

॥ स्यता मूलयानवा सुन ॥

ममव

पुला

पिपला

सुकभाल

छुनी

स्यन्ध

त्रिरुता

सावाकल

तवाक

गमलसारुन

द्विशत

मामसुधर्नवासनगला ॥

॥ यादही पूसकंद दूषा गादही लिखि न मया ॥ यदि छुड मछु क्वाक्षु म
थोप न मछवती ॥ यदकन पद ऊखी मा जाली न च यद वेत ॥ तस
वैकपयादवी मम क्षावन दीयन ॥ ॥ न पाल वसुने जाले नोका
समुनि कऊर न ठामा सि मा ग्जो सि न पक्षे व डवा न रसु यन ॥ तदि
न सि जाले रुला हे न वा (ग्न स्य यूसक ॥ ॥ नामा कृग्रधना वा जो सेत्र
हवले मानक ॥ ॥ ननाथ न वा सेवा काऊन नीया न्ना सुध सा रुत
वाक झ जाला वा यल दास ॥ ॥ छुरु ममु सुधे दाका ली ॥ ॥



१ॐ नमः श्री महादेव
 वाय ॥ अर्थः ॥ नववि
 ज्ञान आलं कलि कृ
 ॥ कामयि दान निव काम
 यि दान निव कामयाय वि
 धि ॥ ॥ यद्वा कवयवस
 क निमकु नम नायु जाव न
 ॥ सुभा ॥ यन सा द्रु लि क
 द्रु लि व सियाय ॥ ख लि
 स्तान ॥ शुचि व म ॥ शुचि नि
 क न द्रु स कामयि दान न
 वसा क प न या न का न कर
 क याय ॥ निव काम न सा
 आ या न क प न न द्रु स
 न कर क याय माल ॥ याल
 न म या स्य द व स क ॥ निम
 कु न यु जा व न ॥ काम याय
 थाय स ॥ प्रा चार्थ यज मान
 न द्रु सान ॥ धन लिया न
 न याय ॥ माल सा थाय स



三

ना

五

५

家



ॐ

सु

क

चार



१५



22

22



भी न

॥३॥

三



五

५४

187

स्य

नि

अस

८५

१५

या॥ पंचरवा नया ऊवस॥ क
कन पूजा वाय॥ (गम गम स
वाय॥ रुजावन॥
ख वला स दय कलसा॥ थ
दिलि नय॥ थया ख व स व
लि कृपा न वाय॥ प दा ल न
दू य क॥ म ला ने व अ ख
व स नय॥ क ले स या ऊ व
स॥ क स क न वाय॥ ख व
स सि ध व मू ढ वाय॥ दू व
न दं द॥ नू र्घ पा न वाय॥
लि डान स (गम न कू रु नय
॥ प श्र षा न पा य का पा ठ
॥ प श्र व र्ण॥ द थ स च य
व र्ण॥ पू र्व स क्रा ड व र्ण॥
द कि दा स॥ ना य व व र्ण॥
प ष्ठि म स वा दू व र्ण॥ उ
रु न स हा कू व र्ण॥ थ व थ
व व र्ण न प ता प स्त क थाः

य॥ थ न वा य धू न दा व॥
क ल स च्छा य त प॥ इ इ न
य॥ सि ध व त य॥ नू इ वा
न न दू य का वै॥ व न सि ध
व ड ड म का न य॥ स क ल
हि ना न य॥ क ल स ठा लि म
लान पू य॥ (ग कू गम त द
वन नय॥ थ न क ल स च्छा
य ल प धू न दा व॥ नू गि क
उ स व स थ॥
ध न नू गि कू उ व स प धू
न दा व॥ उ व पू जा या य॥
त ख द्या स न का या व र्ण
स्य वा दा व॥ नू य का य॥
मा स न कू य॥ वा न स दि न
न॥ नू स नू ज हा धि का नः
या फ क मी नि॥ य ड मा न
स्य य हा न मू नि मि ल थ क
त मा र्क उ रे न वा य नू र्घ न म ना

भा हा न्ध का त्र म ग ना ना
 ज ना ना । हान व सि क्त न म
 ऊ व ज न न नो मि सूर्य स
 क्त न । श्री सूर्याय पू र्ण न
 म ॥ ॐ नि सूर्या च पू जा
 वि धि ॥ ॥ नृ प गु रू पू
 ज ॥ वं हा स्य वा दा व नृ स
 न म ॥ नै म ल्य स वि श्वा
 व क ॥ गु रू द व स क स्त्वा न
 न नै म ल्य ॥ गु रू व ॐ द मा
 स न न म ॥ पू र्ण न म ॥
 लं ख पा सु त्र का या व गु रू
 व पा दा र्घ न म ॥ का क्ता
 स लं ख न या व न य ॥ नृ स
 ऊ ह्ना त्र मु नि मि र्छ र्थ पा
 दा र्घ न म ॥ खं डि क्त ना
 न गु रू या पा द का स दू
 क ॥ ॥ ना वा य क ॥ गु
 रू व न्द ना दि रू ष ली ॥ गु रू

व व न्द न न म ॥ गु रू व सि
 न्द्र न न म ॥ गु रू व य स्त्रा प
 वी र्ण न म ॥ द न सा ज्ञा ना
 वि य ॥ गु रू व पू र्ण न म ॥
 वा क्छा द न कू २ ॥ गु रू व
 वा क्छा द न न म ॥ लं ख वा
 स्त्वा न का या व स क ल्य ॐ
 द वा क्छा द न वा स्य स्य सा मु
 र्ध म हं स प द द ॥ ॥
 धू प ॥ दी प ॥ अ ॥ श्री स व
 र्ण म गु ला न णा दि ॥ नृ प
 ग न्ध दि ॥ पा द सू त्र मा ले ॥
 हा म स रू त्र ल व क्ता य ॥ नृ
 ह्ना ह्ना न ॥ गु रू या क ॥ नृ प
 ग न्ध दि ॥ द क्षि ण ॥ ऊ ह्ना
 व मु म हं क त्रि ष्ण ॥ गु रू र्ध
 न्ना ह्ना वि य ॥ कू रू व क्ष य
 ॥ ॐ नि गु रू पू जा वि धि ॥ ॥
 १ ॐ न म ॥ मि वा य ॥ थ म म

1. 1000

मरुता
६

सा॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 कवः ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 यनमः ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 यनमः ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 यनमः ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 कवः ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 यनमः ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 यनमः ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 ॥ ॐ ह्रीं स॥ नमः शिवाय ॥
 वक्राय नमः ॥ यंगल्युववा
 यपूर्ववक्राय नमः ॥ नमः शिवाय
 नायदक्षिणवक्राय नमः ॥
 वैवामदेवाय उरुवक्राय
 यनमः ॥ नमः शिवाय ॥

शिवमवकायनम॥ कै० ००॥
 ॐ नायन॥ ध्रुवकायनम॥
 ॥ ००॥ निवर्कन्यास॥
 ॐ ग० ॥ जलपात्रपूजा॥ ग०
 यजी॥ ॐ ग० ॥ नृधपात्र
 पूजा॥ नृवाक्र॥ ध्रुवमूद्राना॥
 नृत्नपूजा॥ कृगनृगुलीनक्षो
 य॥ नृसननय॥ नृधवग
 क० एादि॥ ६॥ नृधध्वन॥ शु
 र्कसूटिकसंकासं विनयं च
 नृमोसिकावतदारुग्रहसू
 ३॥ मू० ०॥ मा० ०॥ धन० ०॥ ॥ ग
 व० ०॥ ध्रुवमहादर्व० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 मा० ०॥ सिद्धय॥ ०॥ निध्वनय
 ष्य० ०॥ ॥ ०॥ वक्र० ०॥ ०॥
 मा० ०॥ विष्णुवनम० ०॥ ०॥ नृडा
 यनम० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 ॥ ०॥ सदाशिवायनम० ०॥ ०॥

गंगायनम० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 नम॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 म० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 ॥ ०॥ वक्र० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 वलिनम॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 ॥ ०॥ ग० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 नम॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 मा० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 नन्दादिनिधिस्यानम० ०॥ ०॥
 नृध्विन्यादिनक्षत्रस्यानम॥
 ॥ ०॥ विष्णुमादिया० ०॥ ०॥
 म० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 नृदिखादिनवग्रहस्यानम॥
 ॥ ०॥ भ० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 ॥ ०॥ व० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 नम० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 ०॥ विव० ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥
 ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥ ०॥

स्थानम॥ ॐ नमो नानादिभूष
 कलनागस्थानम॥ ॐ ॥
 ॥ मूलमनुनयिष्यति
 ति॥ ॐ ज्ञानं कलवद
 महासनसं ॥ मादस
 कलनीयमनुदवगाक
 लागत्वाधिपतयवक्रविः
 पूरुडात्मनन्नात्माविद्याः
 धिवनत्वायसु ॥ ॐ श्री
 संपूर्णकलसं ॥ ॐ
 मूर्त्तिपादकां ॥ ॐ ॥
 ॐ ग॥ वलि॥ ॐ कनपूः
 आ॥ ॐ श्रीनम॥ सिं धनमू
 रूपूजा॥ ॐ लक्ष्मीनम॥ ध
 र्जनं वलि॥ धूप॥ दीप॥ आ
 प॥ ॐ श्री संपूर्णकलसा
 यस्वाहा॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 वासधिसकलं जलनपू
 १ तीर्थ

ॐ स्वच्छपस्तवप॥ ॐ
 नपूष्यमात्ताजहूषूजाय
 रिषयमूनिरिषसंता॥ ॐ
 कुरुमूर्त्तिधिवगाकियुनं
 नमामि॥ नृयगंक्षदि॥ ॐ
 निकलसपूजाविधिगा ॥
 ॥ नृधनवगदृष्टालपूजा
 ॥ दधपातस॥ ॐ यपातस
 ॥ नृदिष्टायनमशावलि॥
 ॐ सामायनम॥ पूर्वपातः
 स॥ ॐ पातस॥ नृगमना
 यनम॥ ॐ वक्षयनम॥ वलि
 ॥ ॥ नायूदक्षिणपात
 स॥ ॐ वदृष्टायनम॥ व
 लि॥ ॐ ॐ कायनम॥ ॐ व
 लि॥ ॥ पश्चिमपातस॥
 ॐ निश्चयायनमशावलि
 ॥ ॐ नारुवनमशावलि॥
 ॐ ॐ

॥ हाकुडलनकातसा ॥ ॐ
कनवनमः ॥ वलि ॥ कुंजम
ननमः ॥ वलि ॥ धूप ॥ दीप
॥ जाप ॥ पवथवमरुनी ॥ सु-
य ॥ सूर्यसामासदीपूजावृ-
धदवगुरुगुरुः ॥ गनेश्व-
ग्रहादिद्रुकुंडजन्मनामाद्यदे-
॥ न्नयगन्धादि ॥ न्तिपेशे-
षालपूजाविधिः ॥ ॥
॥ थंदिलिदनसाधनाथंदि-
लिपूजा ॥ सवापाकूम्रपूर्ज-
याय ॥ पञ्चिमदगुलीया-
यथंदिलिस ॥ वलिद्रवन-
॥ धूप ॥ दीप ॥ जाप ॥ मुण्ड-
॥ न्नयगन्धादि ॥ न्तिथं-
दिलीपूजाविधिः ॥ ॥
॥ नगावलिपूजनं ॥ वैष्णो-
शीभूर्गैर्लोऽगुरुनमस्क-
न ॥ ॐ ॥ कनक्तंगन्यासा ॥

॥ जै कनिष्ठ कायनमः ॥ श्री
नृनामिकायनमः ॥ श्री मः
ध्रमायनमः ॥ ह्रीं कूर्कः
न्यायनमः ॥ श्री नरै
व्यायनमः ॥ ननमः कुन कन
वक्रुर्गन्यासः ॥ जलपात्र
पूजा ॥ गभयपि ॥ नृर्षपायपू
जा ॥ रूगष्टुदि ॥ त्रात्मपूजा
॥ त्रावाहन ॥ श्रीसुम्बर ॥
त्रिदवादि ॥ गलः वडः कृष्ण
यागिनी ॥ थवथवमन्त्रन
वलि ॥ श्रीवडः सधियागिनी
वलि गङ्गा गङ्गा स्वाहा ॥ मम
सिद्धि कर्तुं कर्तुं कर्तुं कर्तुं स्वाहा
॥ नृधाम वडः वलि ॥ थन
वलि ॥ मूलमन्त्र नयि योऽं
लि ॥ षडंग ॥ वलि ॥ त्वाक
महावलि नधूनक ॥ धूप ॥
दीप ॥ ज्ञाप ॥ थवथवमन्त्रन

[illegible]

वं कामानिचलुहे नवाय पा
 दकां ॥ प्रिया ॐ लि ॥ ३ ॥ ष
 उं ग ॥ व लि ॥ धूप ॥ दीपा ॥ ड
 प ॥ धव धव मनु नं जाय ॥ अ
 उ ॥ वात्त रुव मरु नो ड त्या
 दि ॥ नू उ गं धादि ॥ ॥
 ॥ न ना ग द पूजा ॥ नू स न पू
 जा ॥ यें ज गं गों सूं गं गें कू ल
 ग ॥ द ह्य न्नाय न म ग ॥ प्रियां ड
 लि ३ ॥ ष उं ग ॥ व लि ॥ ॥
 ॥ नू न म ॥ श्री म हारु न वाय
 ॥ न ना नू मि का र्थ का न र्थ न
 ॥ सिं हा स न स वा न ॥ सू यो
 र्थ ॥ नू आ दि मा स न रु उ ॥
 व नू नै वि ज म ध्व र्थ ला दि
 ॥ गु नू न म स्का न ॥ न्या स ॥ ड्रै
 नू म्मा य रु रू ॥ क न सा ध न ॥
 ड्रै क नि ख का य न म ॥ ड्रै नू

कायनमः॥ॐ क्रौं महत्सो
कायनमः॥ॐ क्रौं तपसा का
यनमः॥ॐ क्रौं सत्यसा काय
नमः॥ धनं कुरुता पूजनं॥
॥ ॥ उकाशस पूजा॥ पू
र्वसः॥ॐ क्रौं त्वात्मनत्वा यन
मः॥ॐ क्रौं॥ नैऋत्यसः॥ॐ क्रौं
विद्यानत्वा यनमः॥ॐ क्रौं वि
वतत्वा यनमः॥ॐ क्रौं वज्रि
रूपाय विद्युदं तन्त्रो वज्रि
प्रयादयान्॥ॐ क्रौं क्रौं क्रौं
सुवृन्द महोरु न वायनः
त्वा यनमः॥ धनं पूजनं॥
॥ ॥ वागीश्वरी पूजनं॥
ॐ क्रौं वागीश्वरी यनमः॥
ॐ क्रौं वागीश्वरी नमः॥
षष्ठं गनसं पूष्य॥ त्वा वाह
नादि॥ यानि मूडा॥ ॥

॥ त्रय ध्यान॥ॐ त्रय सिपूष्य
संकासं द वदवी विचिने
यन॥ वागिसिस्थामनादवी
मृदेस्त्रानामलंकना॥ द्विरु
जामकवक्राव विनयमिह
गामिनी॥ दशवाहू सिर्नसो
मयं पश्चिमस्थिति चिन्ता वनी॥
हृदावाहू समस्तव्यो तसाथ
गविरुयवा॥ कुरु म॥ ध्यान
न पूष्यं नमः॥ क्रौं हृदयाय
नमः॥ ॐ स्वादिषु षष्ठं गन
संयुक्त॥ ॥ सूर्यकानि स
थोदावमना कायाव सिम
ताद्याथसुनय॥ सिमर्नं या
दाव मना काया वलिकाया
व सलिम्यालसु नय॥ क्रौं त्र
प्रायरुद॥ मन्त्र॥ कथादा
मिहं रुद॥ निलिहना॥ क्रौं
त्रयय रुद॥ प्राकृता॥ क्रौं
त्रयय रुद॥ त्रयः॥ क्रौं

कव वाय ईं ॥ नृव गुण ॥
षुं (गन सं पूषा ॥
॥ नृा इति विय मनु ॥ ईं ईं
नृा यरु द् ॥ कृयादाग्नि
यस्तदा ॥ धन ३ ॥ धमनु
नृं नृा इति विय ॥ प्रजाः
पलकाना ॥ मि व दू न या य
॥ सापाला ॥ मनु ॥ नृा य
रु द् ॥ वरि विय मनु ॥ रूना
य वि वि ध का गा रू मि दि धा
न वि दू मा पा ना स न त वा
सि न्या न न स्या नि णि वा दू
यात ॥ ईं ईं सर्व वि द्यी क न
स्था सर्व रू न स्या वलि ग दू
र स्वा द् ॥ ईं नृा यरु द् ॥
कृयादाग्नि वि स ईं नृा ॥
॥ ॥ नृा सू ध मि व उ स
स्का व ॥ ईं ईं ईं ईं स व दू
म द् ॥ ईं व वा य न म ॥ नो रि
कृया ॥ ईं नृा यरु द् ॥

कृया ॥ ईं नृा यरु द् ॥ ना उ
नृा ॥ नृव गुण ॥
सिमना चा ध स ॥ व न ॥ सि
ध न ॥ इ ज्ञा म का ॥ स्तान ॥ य
जन ॥ ईं ईं ईं स व दू म द् ॥
ईं न वा य न म ॥ षुं (गन सं
पूषा ॥ नृा वा दू ना दि ध न म
दा ॥ ध न सि म ना चा ध पूष
नृा ॥ ॥ य दू ध म ध ल प
वा द् ॥ व सि म ना चा ध न नृ
ग्नि कृ गु द् ॥ धा य क ॥ श्री स व दू
प द य ॥ ध न ३ ॥ इ प न प म
नु ॥ इ नृा यरु द् ॥ रू लि क
न ल य ॥ नृा नृा व दू व
न न्या य न म ॥ ध न ३ ॥ ईं ईं
ईं स व दू म द् ॥ ईं व वा य स
न स्या य न म ॥ ध न ३ ॥ स स
द वी स मूल मनु द् ॥ ध न ३
॥ नृा य दि ॥ मा स न कृ य ॥ नृ
ग्नि स्का य न स मूल मु स्वाः

हा॥ ॐ क्रीं क्रीं श्रीसुचन्द
 महारुनवायसा हा॥ नूः
 गिस्सुपन॥ स्वस्तिवाक्त्रप
 १० न॥ ॥ स्वस्तिवाक्त्रप
 दाविद्यस्वस्तिमातुः शुभव
 च॥ यागिनीस्वस्तिमवाः
 स्वस्तिवाक्त्रपका॥
 पूर्वन्दिवायसागुडले
 प्राद्ववचस्तथा॥ स्वस्तिस्वक
 गमस्तुमुगुकायुक्तं दव
 ना॥ रुनवाः रुनवासागस्त
 स्विस्वस्वः स्वचक्रकास्वम
 न्नाः स्वस्वमद्राः स्वायुक्ता
 यलिवालिका॥ ग्रह नक्षत्र
 नासिक्तास्वस्तिमवस्वस
 स्तय॥ स्वस्तिदवाधिदवसि
 ॥ मनुनाञ्जनालीनली॥ ह
 वायनालकृकाः स्वस्तिः
 कूलान्निदवना॥ स्वस्तिना
 जायुञ्जनाः यजमानस्य

ॐ
 स्तिमवदा॥ ॥
 मालनायदथ॥ अग्निमसिन्
 कानयय॥ आकाश॥ मनु॥
 द्रोहदयायनम॥ ॥
 सदकिः लयः वलि॥ थवः
 मनु नैवलि॥ ॥ कलुय
 रववसवलिचक्रयानकाया
 व॥ थवजवनासगय॥ वलि
 वायमनु॥ ॐ द्रु सर्वविद्य
 कर्गकस्य सर्वरुनेथावलि
 गृह्णरस्ताहा॥ नृजजयस
 यनुयहनायहनाहविम
 स्तिना॥ थहनाविद्यिकहान
 ननस्य नृनेनवाहया॥
 वलिगृह्णरस्ताहा॥ अस्तु
 विसर्जन॥ थवलिकाथरु
 वाकली॥ जहृसावावदा॥
 दूजन॥ ॐ द्रु दयायन
 म॥ होमसिगान॥ ॐ द्रु वा
 गाः यनम॥ शिवमाचम

नंदत्वा॥ मिहर्लखनका
 य॥ ॐ कं कवचायकं॥ ॐ
 मसिर्नन॥ ॐ कं ४ अमुय
 रुट॥ ॐ मनुभकायक॥
 ॐ द्रोगराग्नियन॥ यूजन
 ॥ ॐ मनुनकसकनजयन
 यं कृष्णकं कनजका॥
 ॐ द्रोर्लसर्धा जानाययधि
 मवक्रायनम॥ यूजन॥ ॐ
 द्रोदयायस्वाहा॥ तिना
 द्रुतिटय३॥ ॥ ॐ गरु
 धनायस्वाहा॥ ॐ विनष्टन
 द्रुतिदधाना॥ यमगरुधन
 ॥ ॥ ॐ ॐ वं वामदवाय
 उलववक्रायनम॥ पूजनी॥
 ॐ ॐ सिनसस्वाहा॥ न्नाद्रुति
 ॥ ॐ पूं पूष्टिकदहायस्वाहा॥
 घनपूस्वन॥ मासुर्यधम
 त्वा॥ ॥ ॐ ॐ नै नूधाना

यदक्षिवक्रायनम॥
 पूजनी॥ ॐ ॐ सिषायस्वाहा
 ॥ न्नाद्रुति॥ वक्राङ्गकल्पनं
 कृष्णकं कन॥ घानननिल
 ति॥ ॐ सिमन्तानयनस्वाहा
 ॥ ॐ नाद्रुति॥ षट्मासां न
 ध्मात्वा॥ ग्रीष्ममिवाकटि
 वाद्रुङ्गानिपेयिकल्पयं
 ॥ वक्रिषिरागकल्पना॥
 ॥ ॐ गिवनत्वायस्वाहा॥
 न्नाद्रुति॥ ॐ विद्यानत्वायस्वा
 हा॥ न्नाद्रुति॥ ॐ न्नात्मनत्वा
 यस्वाहा॥ न्नाद्रुति॥ मूर्खद
 दयपादकल्पय॥ ॐ ॐ ॐ
 धनवक्रायस्वाहा॥ न्नाद्रुति
 ॥ ॐ यं नत्पूववक्रायस्वा
 हा॥ न्नाद्रुति॥ ॐ नै नूधानव
 क्रायस्वाहा॥ न्नाद्रुति॥ ॐ वं
 वामदवायस्वाहा॥ न्नाद्रुति॥

॥ॐ सं सथा न वक्राय सा
 हा ॥ न्ना रुति ॥ य न वक्र निरु
 हा ॥ ॥ॐ हूं स न या यः
 स्वाहा ॥ न्ना रुति ॥ वक्र वक्र
 न प्रकल्पयेत् ॥ य न सि म न्ना
 न य न ॥ ॥ॐ क्रौं न लू नू व
 य पूर्व वक्राय न म ॥ पूजनं ॥
 ॐ क्रौं क व वा य हूं स्वा हा ॥ न्ना
 रुति ॥ घ ना रुति ॥ ॥ द म
 म मा सि पू ज न ॥ ॥ नू य
 ध्म न ॥ ॐ क्रौं काला मा ला क
 ल ध्म ला वि न य वा नू ल प्र
 हा द क्षि (ल व त्र द ठा कि वा
 म ठु क क म गु ली ॥ स फ डि
 का म हा न जा म सा नू ट नः
 मा म्भ हूं ॥ य व ध्म ला य ऊ
 द व व क्षि नू प म हा क ली ॥
 ॐ नि नू मि स ध्म न ॥ ॥
 स घ मू न क ना स न ॥ ॐ क्रौं

नू क्राय रुट् ॥ ॥ नू मि क
 क गु स ल ख न हा य ॥ ॐ क्रौं
 क व वा य हूं ॥ व सा वि य ॥ म
 म ना स पा रि न ॥ कृ ण न पू ध्म
 ल न य ॥ ॐ क्रौं ४ नू क्राय रुट्
 ॥ म च्छा य क ॥ ध्म म नू न ॥ ॥
 ॥ ॐ क्रौं व मि ष्ठ यो य न म ॥
 पू ज न ॥ ह मा रु व द्म द वा वि
 वि न्त्वा ॥ ॥ ॐ क्रौं नू क्राय रु
 ट् ॥ नू मि क गु प वि न्त्वा ल ख
 न हा य ॥ नू लि न व ना द न ॥
 ॐ क्रौं क व वा य हूं ॥ ल ख न
 मि स हा य ॥ ॐ क्रौं नू क्राय
 रुट् ॥ म च्छा य वि न क स न
 पू र ध्म ल न य ॥ व क्र ता ला
 य ना दा य ॥ ॥ नू म्भ न य
 श्र स मि ध्म हा म वा पा ल घ
 न स धू वा व दू य ॥ ॥
 व उ वृ दि स्त्र य न ॥ पूर्व न

शुद्धेद॥ ॐ क्रौञ्चसनायन
म॥ न्नासन॥ कूणग्रन्थिनि
तिथितय॥ ॐ क्रौञ्चमूर्ख्य
नम॥ ॐ क्रौञ्चमस्त्राहा॥
न्नाद्रुति॥ ॥ दक्षिणा॥ ज
शुद्धेद॥ न्नासनतय॥ ॐ क्रौ
संकलासनायनम॥ कूणग्र
न्थिनिविथितय॥ ॐ क्रौञ्च
नायनम॥ ॐ क्रौञ्चकनायन
म॥ पूजन॥ ॐ क्रौञ्चकनाय
स्त्राहा॥ न्नाद्रुति॥ ॥
पञ्चिमस्यामर्च्येद॥ न्नासन
तय॥ ॐ क्रौञ्चविष्णुसनायन
म॥ कूणग्रन्थिनिविथितय
॥ ॐ क्रौञ्चविष्णुमूर्ख्यनम॥ ॐ
क्रौञ्चविष्णुवनम॥ पूजन॥ ॐ
क्रौञ्चविष्णुवस्त्राहा॥ न्नाद्रुति
॥ ॥ उरुवन्त्रप्रवृत्तिव
द॥ न्नासनतय॥ ॐ क्रौञ्चन

नासनायनम॥ कूणग्रन्थि
निविथितय॥ ॐ क्रौञ्चनन्
मूर्ख्यनम॥ पूजन॥ ॐ क्रौ
ञ्चनन्नामस्त्राहा॥ न्नाद्रुति
॥ ४॥ ॥ न्नामिकुण्डाव
लाकपालपूजा॥ ॐ क्रौञ्च
न्यायनम॥ ॐ क्रौञ्चनन्
नम॥ ॐ क्रौञ्चमूजमायनम॥
ॐ क्रौञ्चनेत्रन्यायनम॥ ॐ क्रौ
ञ्चवृक्षन्यायनम॥ ॐ क्रौञ्च
यूवनम॥ ॐ क्रौञ्चसूक्तन्याय
नम॥ ॐ क्रौञ्चकूष्मन्धनायन
म॥ ॐ क्रौञ्चनन्त्रध्वजनायन
म॥ ॐ क्रौञ्चउर्ध्वचूर्ध्वनायनम
॥ ॥ ननाहुतकादिपू
जन॥ ॐ क्रौञ्चहुतकक्रेत्रपात
यनम॥ ॐ क्रौञ्चविष्णुनाक
क्रेत्रपातायनम॥ ॐ क्रौञ्च
निजिकाक्रेत्रपातायनम॥

ॐ क्रीं काला कृ कृपा लाय
नमः॥ ॐ क्रीं कला सिन कृ
पा लाय नमः॥ ॐ क्रीं ज कृपा
द कृपा लाय नमः॥ ॐ क्रीं
ही म रूप कृपा लाय नमः॥
ॐ क्रीं ज मल कृपा लाय
नमः॥ ॐ क्रीं कृ म य ष कृ
पा लाय नमः॥ ॐ क्रीं य
म नु न न्ना रु नि ॥

॥ न नानू सि ना क्षा दि पू जनी ॥
ॐ क्रीं नू सि ना क्षा हे न वाय
नमः॥ ॐ क्रीं कू नू रु न वाय न
मः॥ ॐ क्रीं वें व गु रु न वाय न
मः॥ ॐ क्रीं टें का ध रु न वाय न
मः॥ ॐ क्रीं नें उ न रु रु न वाय
नमः॥ ॐ क्रीं पें क पा सी ठा रु
न वाय नमः॥ ॐ क्रीं यें री ष ध
रु न वाय नमः॥ ॐ क्रीं ठें सें रु
न रु न वाय नमः॥ ध न सें स्वा
हान्त न्ना रु नि ॥ ध न नू सि ना

क्षा दि पू जनी ॥ ॥ न नानू
गु र्य द हि (क्ष) ला गा सू क
(म) म य मा स न ॥ नू न्नि उ
उ ध या न्त ले ग रु वि रु न य
ध वा स न ॥ ॥ न नानू व क्षा
रू पा र्नी ॥ व क्षा य नि थ य स
म व क्त य व रु व न उ व लाः
व क्षा ॥ ख व ला सु प्र नि नि न
या व ॥ ऊ ला ल प न न्ना स न
न य ॥ ऊ ला स सिन का न य ॥
कृ ग ग्र नि न य ॥ व क्षा ॥ य नि
न पा उ स ॥ नू म नू न नू ध
उ र्त् ख न हा य ॥ नू म नू न
पा ल पा व मी स पा न ॥ नू म
नू न य नि न पा उ स ल ख थ
न ॥ इ इ य हि व रु कृ ण ध
नि ध न य नि न स न य ॥ ॥
व क्षा य नि न स व न सि ध न
उ जाम का स्त्रान न य ॥ व क्षा

वाससीखनथंनमन्त्र॥ ॐ
गिषानाथयविभहस्वच्छन्दा
यधीमहन्नात्रद्रुपदीदया
॥ ॐ नमः शिवाय रुद्र ॥ शुवा
सकृष्टानवास ॥ शुवाससी
खकायावशुवावीनहायका
वस्वपनि कलाहाभसरुपा
वरुवातलिपूलानहयाव
शुवासीनयध्वन ॥ स्वर्गेन
ववर्त्तखलानपाव ॥ शुवान
नमिषुकुण्डायक ॥ ध्वन ३
॥ पनीनसगय ॥ नमिषुकुण्ड
संनय ॥ शुवानिविकुण्ड ॥ व
उसंस्कार ॥ पश्चिमसूयकाय
कण्डुयवा ॥ मन्त्र ॥ ॐ कववा
यद्रु ॥ विषुयिकानयिन ॥
वनसिध्वन ॥ जजमकास्वान
नय ॥ पूजन ॥ ॐ क्रौं क्रौं मिर्व
यनम ॥ ॐ क्रौं क्रौं शुवाशक
नम ॥ ॐ क्रौं क्रौं शुवास्थानम ॥

षष्ठं मनसं पूष ॥ कृष्टानप
नमनगय ॥ स्वदक्षिणसं
पु ॥ ध्वन ॥ शुवासाधनविधि
॥ ॥ ननाध्वकसाधन
विधि ॥ नृधपायसीखनहा
यमन्त्र ॥ ॐ नमः शिवाय रुद्र ॥ नृ
रुन ॥ नमिसपान ॥ ध्वन ३ ॥
ध्वकवउवा ॥ ध्वकसुधल
नयमन्त्र ॥ वउवाननय ॥ ह
दयमन्त्रन ॥ ॐ क्रौं रुदयाय
नम ॥ विष्णुदवसुधनपाप
सुधकावसाधनय ॥ वउसं
स्कार ॥ निसिक्कनादि ॥ स्वा
कावक्रमयिध्वत्वा ॥ नमि
कण्डुसधलकानकमन्त्र ॥
ॐ क्रौं गिषायवोषद्रु ॥ यक
लीसधलनयाववक्रमयी
ध्वत्वा ॥ ध्वनविन्दान ॥ क
शग्रन्धिपुढावहाय ॥ मन्त्र ॥

ॐ क्रौञ्चक्र (६) स्वाहा ॥ वं कू
 ली सच्च न नयाव विष्णु मयी
 आत्मा ॥ घ न विन्दु दानं ॥ कू
 णग्रन्थि पूजा वहाय ॥ ॐ क्रौ
 विष्णु स्वाहा ॥ त्रिगुणि कू उम
 ॥ घ न नयाव नू द मयी आ
 त्मा ॥ घ न विन्दु दानं ॥ कू णग्र
 नि पूजा वहाय ॥ ॥
 ॐ क्रौ नू दाय स्वाहा ॥ ध लन मि
 सहाय धनि ॥ ॥ पाद गार्ग
 जद लो र्णा मी गुष्ठा ना मि का
 ग्र क ॥ ध ना र्णा स मूर्ख व क्र न
 मु ना म्प्र व मा व व न ॥ ॥
 ॐ क्रौ नू दाय रुद्र ॥ मि सच्च न
 नहाय ॥ रु दा त्म स मूर्ख न द
 न कू म्पा त्म स प्र व र्ण न न ॥ ॐ क्रौ
 रु द दया य न मा ॥ ॥ कू ण च्छा
 य का व ध्र व क स्र वा क न दाय
 का व र्ण स वा य ॥ ॥ ॐ क्रौ
 नू दाय रुद्र ॥ कू ण च्छा य ॥

॥ ॥ कू णग्रन्थि न पू विष्णु
 द व स मा कू र्ण नय ॥ विष्णु
 द व द (५) ॥ घ न सा रा ग थ
 या व क ल्य ना या य ॥ कू ण
 ग्रन्थि न द क्षि ण रा ग स घ न
 गृ हित्वा म नु ॥ ॐ क्रौ नू दाय
 य रुद्र ॥ ॐ क्रौ नू दाय स्वाहा ॥
 ॥ ॥ द क्षि ण न व शु कृ प क
 ॥ ॥ वाम रा ग घ न गृ हित्वा
 म नु ॥ ॐ क्रौ सा मा य स्वाहा ॥
 वाम न य कृ प क ॥ ॥
 म ध्य रा ग घ न गृ हित्वा म नु
 ॥ ॐ क्रौ नू मि सा मा र्णा स्वाहा
 ॥ शि नी य न य म ध्य रा ग ॥ ॥
 ॥ ॐ क्रौ नू मि य सि र क न स्वा
 हा ॥ व क्र ग्रन्थि घ न व शु वा
 न उ र्ण अ य ॥ ध म नु न रु र
 ॥ ॥ ॐ क्रौ सा मा य स्वाहा ॥
 ॐ क्रौ नू मि सा मा र्णा स्वाहा ॥

ॐ क्रौं नमिथस्त्रिहृदय
स्वाहा॥ धनत्राहृतिधनदा
व. षष्ठं गनसंपूर्ण॥ धनस
॥ ॐ क्रौं नमिथस्त्रिहृदय
ॐ क्रौं कववायदं ॥ ॐ नमः
॥ धनमूलादर्थयिता ॐ क्रौं
रुदयायनमः॥ नन्येधनवि
न्दन्त्वा॥ ॥ धनसकासा
य॥ ऊजमानः नानार्थसं॥ ऊ
ज॥ नानार्थपापहर्त्रहृदयः नाना
र्थपापहर्त्रपना॥ नानार्थसूत्र
मनापीत्वा सर्वमाश्रयमिच्छि
त॥ ॐ निधनं तदुद्धिवक्राहि
द्यानसंधानं॥ ॥ ॐ क्रौं तै
सद्याजानायस्वाहा॥ पश्चिम
॥ ॥ ॐ क्रौं वं वामदेवाय
स्वाहा॥ उरुन॥ ॥ ॐ क्रौं
नत्पूरुषायस्वाहा॥ पूर्व
॥ ॐ क्रौं नै नद्यानायस्वाहा॥

दक्षिनस॥ ॥ ॐ क्रौं नत्पूरु
षायस्वाहा॥ मध्यस॥ ॐ
निवक्राहिद्यान॥ ॥ नगा
वक्रुकि कवनं धनधन॥
वर्तंगतहृल्लुवाया॥ देव
ननयावत्वाया॥ ॐ क्रौं क्रौं स
द्याजानायस्वाहा॥ यां विन
न॥ यां विनदं॥ ॐ क्रौं क्रौं नद्या
नत्पूरुषायस्वाहा॥ यां वि
ननं वं विदं॥ ॥ ॐ क्रौं क्रौं
नत्पूरुषायस्वाहा॥ नानायस्वा
हा॥ वां विननदानं नदं॥
॥ ॐ क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं ॐ
नत्पूरुषान्नद्यानवामदे
व. सद्याजानायस्वाहा॥ यां
कृत्स्नयकृत्स्नि॥ ये कृत्स्नीन
मध्या॥ ॥ ॐ क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं
क्रौं सद्याजानायवामदेवन्न
द्यानत्पूरुषस्वाहा॥ नानाय
स्वाहा॥ युकृत्स्नीनवं कृत्स्नीन

साक्षात्कार

मध्या॥ धनं वक्रसंधन॥
 ॥ ॥ दक्षिणवक्रकाय॥
 पूजन॥ ॐ क्रौं क्रौं नै नै धाना
 यदक्षिणवक्राय नमः॥ स्वा
 हार्त्तं कृत्वा॥ धनं दक्षिणवक्र
 सदेवता सकल ज्ञाना धन
 याय द॥ धनं संपादना याय
 ॥ ॥ नताजिह्वा संधनं
 ॥ क्रौं हि नै नै य स्वाहा॥ ॐ
 धनं॥ क्रौं कनकाय स्वाहा॥
 पूर्व॥ क्रौं नकाय स्वाहा॥ ज्ञान
 या॥ क्रौं कनकाय स्वाहा॥ नै नै
 त्वा॥ क्रौं स्वाहा॥ पश्चिम
 ॥ क्रौं शुभ्राय स्वाहा॥ वायू
 य॥ क्रौं वक्रपादाय स्वाहा॥
 मध्या॥ जिह्वादिपनी॥ घ
 नधन॥ ॥ क्रौं हि नै नै
 कनकाय स्वाहा॥ ॐ धनं
 पूर्व॥ ॥ क्रौं क्रौं कनकाय
 काय स्वाहा॥ पूर्व॥ ज्ञान

॥ ॥ क्रौं नकाय स्वाहा
 ॥ ज्ञानेनै नै नै स्वाहा॥ ॥
 ॥ क्रौं कनकाय स्वाहा॥ प्रसाय स्वा
 हा॥ नै नै पश्चिम॥ ॥
 ॥ क्रौं शुभ्राय स्वाहा॥ नै नै
 य स्वाहा॥ पश्चिम नै वायू
 य॥ ॥ क्रौं क्रौं नै नै नै
 वक्रपादाय स्वाहा॥ वायू
 नमः॥ मध्या॥ ॥ धनं घ
 नधनया॥ ॥ क्रौं वक्र
 पाय स्वाहा॥ मध्या॥ ॐ
 जिह्वा संधन॥ ॥
 शुभास नया वलं गत नाना
 दा प्रनीत स नया॥ ॥
 ॐ क्रौं क्रौं ॐ धनं नाय उक्तं
 वक्राय नमः॥ पूजन॥ ॐ
 क्रौं ॐ नै नै नै स्वाहा॥
 नै नै नै नै ॥ ॥
 ॐ क्रौं क्रौं नै नै नै नै

नायनम॥ ॥ॐ क्रीं क्रींः
 क्रीं श्रीसु वृन्दमहादेव वा
 मिनामकननाय स्वाहा॥
 ॥ ॥ॐ क्रीं वागीश्वर्यैः
 नम॥ पूजन॥ ॐ क्रीं वागीश्व
 र्यै स्वाहा॥ ॐ क्रीं वागीश्वरा
 य स्वाहा॥ तिलाकृति॥ प्र
 त्येकं॥ ॐ क्रीं वागीश्वर्यै वा
 गीश्वराय स्वाहा॥ तिलाकृ
 ति॥ ३॥ ॐ क्रीं हृदयाय नम
 ॥ वागीश्वर वागीश्वरी वि
 सर्जन॥ ॥ माननापिन
 वाक्यस्य चारुनरागप्र
 नीतनुप्रकल्पयन्त॥ ॥
 थना॥ नृपवनं धामधन॥
 ॥ श्यादसमिधहामा॥ १७
 ॥ ॐ क्रीं त्वमस्मिन्नेवैवैवैवै
 कपावने पवर्म समयन्त न
 स्मान्त्वं दीयन् स भर्षस्व

प्ररुपयाश्रुदं॥ नृसि
 यिनापयाया॥ ॥ थना
 भाद्यनाकृतिविस्मय
 ॥ कृज॥ वदक॥ गदा॥ या
 गिनी॥ वडुवदि॥
 ॥ ॐ क्रीं विष्णुव स्वाहा॥ ॐ
 क्रीं नूननाय स्वाहा॥ ॐ क्रीं
 वक्रास्वाहा॥ ॐ क्रीं र्शक
 नाय स्वाहा॥ ॥ वक्राय नि
 न॥ ॥ ननां न्द्रादि
 कपाल॥ १०॥ वक्रा
 नृकमारुका॥ ७॥ नृसि
 क्षादिनृकरेव वा॥ ७॥ प
 वलिङ्ग॥ कलङ्ग॥ हे सुं स
 हा॥ श्री स्वाहा॥ लक्ष्मी स्वाहा
 ॥ ॥ पश्चरवा न वग्न
 २॥ ॐ नृदित्याय नम॥ ॐ
 सामाय नम॥ ॐ नृगता